Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 26

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

29 जून 2017 ई 4 शव्वाल 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

चूहे मत बनो जो नीचे की ओर जाते हैं अपितु ऊपर उड़ने वाले कबूतर बनो जो आकाश की बुलंदियों को अपने लिए पसंद करता है। तुम गुनाहों के परित्याग की बैअत करके फिर गुनाह पर स्थिर न रहो और सांप की भांति न बनो जो खाल उतारकर फिर भी सांप ही रहता है। मृत्यु को स्मरण रखो कि वह तुम्हारे पास आती जाती है और तुम्हें उसकी कोई सूचना नहीं। प्रयास करो कि पवित्र हो जाओ कि मनुष्य पवित्रता को तभी प्राप्त करता है जब स्वयं पवित्र हो जाए ।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"हे ख़ुदा के जिज्ञासुओ ! कान खोलो और सुनो कि विश्वास जैसी कोई वस्तु नहीं। विश्वास ही है जो पाप से बचाता है, विश्वास ही है जो पुण्य कर्म करने की शक्ति देता है, विश्वास ही है जो ख़ुदा का सच्चा प्रेमी बनाता है । क्या तुम विश्वास के बिना पाप का परित्याग कर सकते हो ? क्या तुम विश्वास के अदभुत प्रकाश के अभाव में तामसिक आवेग से रुक सकते हो ? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सांत्वना प्राप्त कर सकते हो ? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सच्चा परिवर्तन ला सकते हो ? क्या तुम विश्वास के बिना कोई सच्ची ख़ुशहाली प्राप्त कर सकते हो ? क्या आकाश के नीचे कोई ऐसा कफ़्फ़ारा और फ़िदिया है जो तुम से पापों का परित्याग करा सके ? क्या मरयम का बेटा ईसा ऐसा है कि उसका बनावटी ख़ून पाप से मुक्ति दिलाएगा ? हे ईसाइयो ऐसा झूठ मत बोलो जिससे धरती टुकड़े टुकड़े हो जाए । यसूअ मसीह स्वयं अपनी मुक्ति के लिए विश्वास का मुहताज था। उसने विश्वास किया और मुक्ति पाई । अफ़सोस है उन ईसाइयों पर जो यह कहकर प्रजा को धोखा देते हैं कि हमने मसीह के ख़ून से पाप से मुक्ति पाई है। हालांकि वे सिर से पांव तक गुनाहों में डूबे हुए हैं। वे नहीं जानते कि उनका ख़ुदा कौन है बल्कि जीवन तो लापरवाही से भरपूर है। मदिरा की मस्ती उनके मस्तिष्क में समाई हुई है, परन्तु वह पवित्र मस्ती जो आकाश से उतरती है उससे वे अवगत नहीं। जो जीवन ख़ुदा के साथ होता है और जो पवित्र जीवन के परिणाम होते हैं वे उनके भाग्य में नहीं । अत: तुम स्मरण रखो कि विश्वास के बिना तुम अंधकारमय जीवन से बाहर नहीं आ सकते और न रूहुलक़ुदुस तुम्हें मिल सकता है। बधाई है उनको जो विश्वास रखते हैं क्योंकि वे ही ख़ुदा के दर्शन करेंगे। बधाई है उनको जो संदेहों से मुक्ति पा गए हैं, क्योंकि वे ही पाप से मुक्ति प्राप्त करेंगे। बधाई तुम्हें जबकि तुम्हें विश्वास की दौलत प्रदान की जाए कि उसके पश्चात तुम्हारे पाप की समाप्ति होगी। पाप और विश्वास दोनों एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते । क्या तुम ऐसे बिल में हाथ डाल सकते हो जिसमें तुम एक अत्यन्त ज़हरीले सांप को देख रहे हो ? क्या तुम ऐसे स्थान पर खड़े रह सकते हो, जिस स्थान पर किसी ज्वालामुखी पर्वत से पत्थरों की वर्षा हो रही हो या बिजली गिर रही हो या एक चीर फाड़ डालने वाले शेर के हमला करने का स्थान है, या एक स्थान है जहां एक सर्वनाश करने वाली प्लेग मानव जाति को समाप्त कर रही है। फिर यदि तुम्हें ख़ुदा पर ऐसा ही विश्वास है जैसा कि सांप, बिजली, शेर, या प्लेग पर, तो असंभव है कि उसके सम्मुख तुम अवज्ञाकारी बन कर दण्ड का मार्ग अपना सको या उससे सत्य और वफ़ादारी का संबंध तोड़ सको।

हे वे लोगो ! जो भलाई और सच्चाई हेतु बुलाए गए हो तुम निसंदेह समझो कि तुम में ख़ुदा की चुम्बकीय शक्ति उस समय पैदा होगी और उसी समय तुम पापों के घृणित धब्बों से पवित्र किए जाओगे जब तुम्हारे हृदय विश्वास से भर जाएंगे। संभव है तुम कहो कि हमें विश्वास प्राप्त है। अत: स्मरण रहे कि यह तुम्हें धोखा हुआ है। विश्वास तुम्हें कदापि प्राप्त नहीं, क्योंकि उसके अनिवार्य तत्व प्राप्त नहीं। कारण यह कि तुम पाप का परित्याग नहीं करते, तुम ऐसा पांव आगे नहीं बढ़ाते जो बढ़ाना चाहिए। तुम उस प्रकार नहीं डरते जिस प्रकार कि डरना चाहिए। स्वयं विचार करो कि जिसको विश्वास है कि अमुक बिल में सांप है वह उस बिल में कब हाथ डालता है, और जिस को विश्वास है कि उसके भोजन में विष है वह उस भोजन को कब खाता है। जो स्पष्टत: देख रहा है कि अमुक जगह में चीर-फाड़ डालने वाले एक हज़ार शेर हैं, उसके पग लापरवाही और ग़फ़लत से उस जंगल की ओर क्योंकर उठ सकते हैं। अत: तुम्हारे हाथ पांव, कान और तुम्हारे नेत्र पाप पर किस प्रकार साहस कर सकते हैं, यदि तुम्हें ख़ुदा और उसके बदला देने एवं दण्ड विधान पर विश्वास है। पाप विश्वास पर विजयी नहीं हो सकता और जब तक कि तुम एक भस्म और नष्ट करने वाली अग्नि को देख रहे हो तो उस अग्नि में स्वयं को क्योंकर डाल सकते हो। विश्वास की दीवारें आकाश तक हैं। शैतान उन पर चढ़ नहीं सकता। प्रत्येक जो पवित्र हुआ वह विश्वास से पवित्र हुआ। विश्वास दुख उठाने की शक्ति देता है। यहां तक कि एक राजा को उसके सिंहासन से उतारता है और भिखारियों का लिबास पहनाता है। विश्वास प्रत्येक दुख को आसान कर देता है। विश्वास ख़ुदा के दर्शन कराता है। प्रत्येक पवित्रता विश्वास-मार्ग से आती है। वह वस्तु जो पाप से मुक्ति दिलाकर ख़ुदा तक पहुंचाती और सत्य और दृढ़ संकल्प में फ़रिश्तों से भी आगे बढ़ा देती है वह विश्वास है। प्रत्येक धर्म जो विश्वास के साधन उपलब्ध नहीं कराता वह झूठा है। प्रत्येक धर्म जो सुनिश्चित साधनों से ख़ुदा के दर्शन नहीं करा सकता वह झूठा है, प्रत्येक धर्म जिसमें प्राचीन कहानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं वह झूठा है। ख़ुदा जैसा पहले था वैसा अब भी है, उसकी शक्तियां जैसी पहले थीं वैसे अब भी हैं, उसका निशान दिखलाने पर जैसा पहले आधिपत्य था वैसा अब भी है। फिर तुम क्यों केवल कहानियों पर राज़ी होते हो ? उस धर्म का विनाश हो चुका है जिसके चमत्कार मात्र कहानियां हैं, जिसकी भविष्यवाणियां मात्र कहानियां हैं। और उस जमाअत का विनाश हो चुका है जिस पर ख़ुदा नहीं उतरता और जो विश्वास द्वारा ख़ुदा के हाथ से पवित्र नहीं हुई। जिस प्रकार मनुष्य भोग-विलास की वस्तुएं देखकर उनकी ओर खींचा जाता है इसी प्रकार मनुष्य अब आध्यात्मिक सुख का सामना विश्वास द्वारा प्राप्त करता है तो वह ख़ुदा की ओर खींचा जाता है, और उसका सौंदर्य उसको ऐसा मुग्ध कर देता है कि अन्य समस्त वस्तुएं उसको बेकार दिखाई देती हैं। मनुष्य उसी समय पाप से सुरक्षित रह पाता है जब वह ख़ुदा और उस के शौर्य, प्रताप, बदला देने और

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ज़िक्रे इलाही

तकरीर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो

जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई (भाग-1)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى (सूरः आला)

ज़िक्रे इलाही इस विषय का महत्व कितना है:

आज मेरा विषय जैसा कि मैंने कल कहा था एक ऐसी बात से संबंधित है जिसके बारे में मेरा विश्वास है कि वह निहायत ही ज़रूरी है। और यह केवल अटकलें और अनुमान पर ही नहीं बल्कि इस के बारे में क़ुरआन की आयतों का भी निर्णय और आदेश है। शायद कुछ लोग इसे सुनकर कह दें कि यह तो मामूली बात है और हम पहले से ही इसे जानते हैं। लोगों के दिलों का हाल तो सिवाय अल्लाह तआला के और कोई नहीं जानता। मगर वर्तमान स्थिति के अनुसार कह सकता हूँ और कहता हूँ कि इस विषय में कई बातें ऐसी बयान जाएंगी जिन्हें अक्सर लोग नहीं जानते और जिन्हें मैंने किसी किताब में भी नहीं देखा।

चूंकि विषय ऐसा साधारण है कि इसके हीडिंग को सुनकर अक्सर लोग कह देंगे कि यह तो मामूली और पहले का जाना हुआ है। इसलिए मैं इसको सुनाने से पहले यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि यह विषय बहुत आवश्यक और प्रमुख है इसलिए इस को विचार से सुनिए। अगर अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी तो इस में बहुत सी बातें ऐसी बयान करूँगा कि आप लोग नोट करके उन पर अमल करेंगे तो ख़ुदा तआला उन्हें तुम्हारे लिए बहुत ख़ैर और खूबी का कारण बनाएगा मगर पहले इसके कि मैं मूल विषय शुरू करूं एक और बात सुना देना चाहता हूँ जो यह है।

जलसा में आकर लाभ उठाना चाहिए:

कुछ लोग जो जलसा में शामिल होने के लिए आते हैं वह इधर उधर फिर कर अपना समय बिता देते हैं यह बहुत बुरी बात है। अल्लाह तआला ने उन्हें रुपया इसलिए नहीं दिया कि बर्बाद करें। अगर उन्होंने यहां आकर बेकार ही फिरना था तो उन्हें यहां आने की ज़रूरत ही क्या थी? जो लोग यहाँ आते हैं वे असुविधा उठाकर और रुपया खर्च करके इसलिए आते हैं कि कुछ सुनें और लाभ उठाएं। लेकिन मुझ तक यह शिकायत पहुंची है कि व्याख्यान देने वाले के व्याख्यान देने के समय कई लोग उठकर इसलिए चले जाते हैं कि ये बातें तो हम ने पहले ही सुनी हुई हैं। ऐसे लोगों को मैं कहता हूँ कि अगर उनकी यह बात सही है कि जो बात सुनी हुई हो उसे फिर नहीं सुनना चाहिए तो उन्हें कुरआन भी दोबारार नहीं पढ़ना चाहिए। और एक बार पढ़ कर छोड़ देना चाहिए। इसी तरह नमाज़ और रोज़ा के बारे में भी करना चाहिए। लेकिन यह सही नहीं है। अत: अगर कोई ऐसी बात सुनाई जा रही हो जो पहले भी सुनी हो। तो उसे भी पूरे शौक और ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए। क्योंकि ऐसे भी बहुत लाभ होता है और वह बात पूरी तरह से हृदय पर छप जाती है। फिर अगर मज्लिस से एक उठता है तो दूसरा भी उसे देख कर उठ खड़ा होता है और तीसरा भी। इसी तरह कई लोग उठना शुरू हो जाते हैं जो बहुत बुरी बात है। हाँ अगर किसी को उठने की सख्त जरूरत हो जैसे पेशाब या पाख़ाना करना हो तो वह उठे और बाहर चला जाए मगर चाहिए कि अपनी ज़रूरत को पूरा करके बहुत जल्दी वापस चला आये ताकि यहाँ जिस उद्देश्य और लक्ष्य के लिए आया है वह उसे मिल सके और जो लाभ और फायदा के लिए जलसा में शामिल हुआ है वह मिल सके। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जब कोई व्यक्ति किसी नेक मज्लिस में बैठता है तो बिना इसके कि वहाँ की बातें सुने और उन पर अमल करे यूं भी उसे लाभ हो जाता है। हदीस में आता है। एक मज्लिस में कुछ आदमी बैठे थे अल्लाह तआला ने फरिश्तों से पूछा कि मेरे अमुक बन्दे क्या कर रहे थे। (रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने उनके संबंधित इसलिए सवाल नहीं किया कि वह जानता न था बल्कि अल्लाह तआला मूल घटना जानता था।) उन्होंने कहा ज़िक्रे इलाही कर रहे थे। अल्लाह तआला ने फरमाया कि जो कुछ उन्होंने मांगा मैंने उन्हें दिया। फरिश्तों ने कहा इन में एक ऐसा व्यक्ति भी बैठा था जो ज़िक्रे इलाही नहीं करता था यूं ही बैठा था। अल्लाह तआला ने फरमाया उनके पास बैठने वाला हतभागा नहीं हो सकता मैं उसे भी पुरस्कार व सम्मान दूंगा। (बुखारी किताबुद्दाअवात) अर्थात कि नेकों की सोहबत में जो बैठता है चाहे एक बार उसे हिदायत नसीब न हो लेकिन दूसरे समय में ज़रूर मिल जाती है। यह नहीं हो सकता कि बावजूद दिल की श्रद्धा से ऐसी सभा में बैठने के वह काफिर ही रहे। हाँ जो एकाध बार बैठकर फिर नहीं आता और काफिर ही रहता है उसके लिए यह बात नहीं है। तो आप लोग बहुत हद तक मजलिस में बैठे रहने की कोशिश करें और अगर किसी को कोई सख्त ज़रूरत हो तो उसे पूरा करके जल्दी वापस आए।

दुआ के तरीके वर्णन करने से अल्लाह तआला और अधिक प्रकट कर दिया:

मैंने पिछले दिनों दुआ से संबंधित कुछ ख़ुत्बे कहे थे और उन में अल्लाह तआला की कृपा से इस प्रकार के विषय बयान हुए थे कि जिनसे कई लोगों ने लाभ उठाया। मेरे पास कई ख़त आए जिन में लिखा था कि उनसे बहुत लाभ हुआ। उन से संबंधित मुझे एक व्यक्ति ने लाहौर से पत्र लिखा था उसका नाम नहीं पढ़ा गया मालूम होता है अल्लाह तआला उसके बारे में सत्तारी (छुपाने) से काम लिया। उसने लिखा कि आप ने यह क्या कर दिया कि आप ने वह तरीके बता दिए जो अत्यधिक छुपे चले आते थे और जिन में से सूफ़ी कोई एकाध, वर्षों सेवाऐं लेने के बाद बताते थे। आप ने भांडा ही फोड़ दिया इसके साथ ही उसने यह भी लिखा कि आप भी ऐसा करने के लिए मजबूर थे क्योंकि आप को अपनी जमाअत से बहुत प्यार है इसलिए उन्हें ये तरीके बता दिए हैं। इसके संबंधित मैं कहता हूँ कि मैंने केवल इसीलिए वे तरीके बताए नहीं थे कि मुझे अपनी जमाअत से मुहब्बत है। इसमें संदेह नहीं कि मुझे प्यार है और ऐसा प्रेम है कि और किसी को अपने सगे सम्बंधियों से भी क्या होगा। लेकिन मुझे लगता है वे तरीके इसलिए भी बताए कि मैं जानता हूँ कि वह ख़ुदा जिसने मुझे वह बताए थे ऐसा ख़ुदा है कि उसका दिया हुआ माल जितना अधिक खर्च किया जाए उतना ही अधिक बढ़ता और बड़े बड़े पुरस्कार का कारण बनता है यही कारण है कि मैंने जितने तरीके बताए थे उन्हें बता कर अपना घर खाली नहीं बल्कि और अधिक भर लिया था। फिर मुझे विश्वास था कि उनके बताने से मुझे कोई नुकसान नहीं होगा। क्योंकि ज्ञान कोई ऐसी चीज नहीं है जो खर्च करने से घटे। बल्कि ऐसी बात है कि जो खर्च करने से बढ़ती है लेकिन अगर मुझे यह भी विश्वास होता तो जिस तरह सहाबा कराम कहते हैं कि अगर हमारी गर्दन पर तलवार रख दी जाए और हमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई ऐसी बात याद हो जो किसी के सामने बयान न के जा चुकी हो। तो पहिले इसके कि तलवार हमारी गर्दन काटे वह बयान कर देंगे। (बुखारी किताबुल इलमा)इसी तरह मैं भी कहता हूँ कि अगर वर्णन करते करते समस्त तरीके समाप्त हो गए तो भी ज़रूर सबको बयान कर देता। इसलिए इस समय जितना हो सके मैंने बयान किए। और मेरे दिल में यूं ही विचार गुज़रा कि दुआ के बारे में जितने तरीके थे मैंने सारे के सारे बयान कर दिए हैं। लेकिन जब मैं नमाज़ के बाद घर आया और दुआ करने लगा तो अल्लाह तआला ने इतने तरीके मुझे समझाए जो पहले कभी मेरे विचार और गुमान में भी नहीं आए थे। अब भी जिस विषय पर बोलना चाहता हूँ उसके बारे में जहां तक मुझ से हो सका। नोट लिखकर लाया था। लेकिन रास्ते में ही आते आते अल्लाह तआला ने और बहुत सी बातें सुझा दें। तो मैंने दुआ के तरीके बताए थे जो बहुत आवश्यक थे।

इस विषय का पालन करने के लिए दुआ अपने आप मकबूल (स्वीकृत) होगी:

लेकिन अब जो कुछ बयान करना चाहता हूँ वह दुआ के तरीके भी अधिक आवश्यक है अगर इसे आप लोग अच्छी तरह समझ लें और उस पर अमल करें तो दुआ स्वत: स्वीकार हो जाएगी। (शेष.....)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

दूसरी दुनिया तो अम्बिया की तारीख़ पढ़ती है या सुनती है दूसरे मुसलमान पवित्र कुरआन में नबियों और उनके मानने वालों की बातें पढ़ते और सुनते हैं और प्रारंभिक मुसलमानों के साथ होने वाली घटनाओं और उनकी मज़लूमियत की बातें पढ़ते हैं या अपने उलमा से सुनते हैं लेकिन अहमदी मुसलमान वह है जो मसीह मुहम्मदी को मानने की वजह से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को मानने की वजह से इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए आने वाले अल्लाह तआला के फरस्तादे पर ईमान के कारण वास्तव में इस स्थिति से गुज़र रहे हैं जो दूसरों के लिए शायद धार्मिक अत्याचार की पुरानी घटनाएं और कहानियां हों।

हम वे लोग हैं और हमें ऐसा होना चाहिए क्योंकि हम ने मसीह मौऊद को स्वीकार किया है जो सांसारिक परीक्षाओं और विरोधियों की प्रतिद्वंद्विता में न धैर्य का दामन हाथ से छोड़ने वाले हैं इसलिए न अपने ईमान से पीछे हटने वाले हैं। हम इस बात का एहसास रखने वाले हैं कि हमारे दुःखों का उपाय केवल अल्लाह तआला के पास है। हमें कष्टों के समय दुनियादारों के सामने नहीं बल्कि सभी शक्तियों के मालिक के सामने झुकना है, मदद मांगनी है। वही है जो हमें हमारे धैर्य और दुआ के कारण हमें इन परेशानियों से निजात दिलाने वाला है और उद्धार दिलाएगा। इंशा अल्लाह।

एक सबर करने वाले और अल्लाह तआला की तरफ झुकने वाले मौमिन के लिए अल्लाह तआला की तरफ से खुशख़बरियां ही खुशखबरियां हैं।

कुरआन मजीद तथा हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों की रोशनी में अत्याचारों और विरोद्धों पर सबर करने और दुआओं से काम लेने की हिदायत का वर्णन।

अतः आजकल जो जमाअत अहमदिया के व्यक्तियों पर विभिन्न देशों में सख्ती परेशानी और असुविधा के हालात हैं उस पर हमारा काम है कि धैर्य और दुआ के साथ अल्लाह तआला की मदद मांगते हुए उसके आगे झुकें। वही है जो कुफर के इमामों को पकड़कर हमें उनसे बचाने की, उनके मकरों से बचाने की, उनकी तदबीरों से बचाने की सबसे अधिक शक्ति रखता है और जमाअत के इतिहास में हम यही देखते आए हैं कि दुश्मन अपनी सारी शक्तियों और संसाधनों के बावजूद भी असफल और नामुराद ही हुआ है और जमाअत का कदम आगे ही बढ़ता चला गया है।

पाकिस्तान में भी आजकल आज़ाद कश्मीर में विधान सभा में पाकिस्तानी मुल्ला के पदचिह्न पर वहाँ मुल्ला भी और वहाँ के राजनीतिज्ञ भी अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम घोषित करने का कानून कश्मीर विधान सभा में पेश कर रहे हैं बल्कि पेश हुआ है। बहरहाल ये लोग जो कुछ भी करना चाहते हैं कर लें पाकिस्तान की विधान सभा ने अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम करार देकर क्या पा लिया कौन सा जमाअत की तरक्की रुक गई। अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत तो नई नई क्षमताओं को प्राप्त करती चली जा रही है लेकिन जमाअत के लोगों को यह याद रखना चाहिए कि धैर्य के साथ अल्लाह तआला की मदद के लिए दुआ करना और उसके आगे झुकना अपनी नमाज़ों और इबादतों की रक्षा करना हर अहमदी का कर्त्तव्य है और यही बात जो है वह अल्लाह तआला के फज़्लों का अधिक वारिस बनाएगी।

अलजीरिया, बांग्लादेश, इण्डोनेशिया और अरब देशों में अहमदियत के विरोद्ध का वर्णन, पिछले दिनों बांग्लादेश में मौलवियों की तरफ से हमारी मस्जिद पर हमला हुआ जिस में हमारे मुरब्बी चाकुओं और छुरियों के वार से बहुत ज़ख्मी हुए।

कुछ अहमदियों के बारे में शिकायत है कि वे तब्लीग़ के दौरान विरोद्धियों के लिए कठोर भाषा का प्रयोग करते हैं। अगर यह सच है तो फिर ऐसे अहमदियों से कहूंगा कि बेहतर है वह प्रचार न किया करें । यह प्रचार उन्हें अल्लाह तआला की नज़दीकी दिलाने के बजाय अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बना रहा होगा। इसलिए हमें याद रखना चाहिए कि अगर यह सही है कि सोशल मीडिया पर कुछ अहमदी चिड़ कर ग़लत रंग और सख्ती से उन लोगों के जवाब देते हैं तो ग़लत है। हमें याद रखना चाहिए कि इस तरह हम न केवल यह एक गुनाह नहीं कर रहे बल्कि हम इस गुनाह को भी करने वाले हो रहे हैं कि नई नस्ल को भी अहमदियत से दूर कर रहे हैं। कुछ युवाओं में विचार उठता है कि हमारे पास तर्क नहीं था शायद इसलिए हम कठोरता से जवाब दे रहे हैं हालांकि यह ग़लत है। अतः ऐसे लोगों को तुरंत अपने व्यवहार बदलने की जरूरत है।

आदरणीय पी. पी नाज़मुद्दीन साहिब आफ पेंगाडी केरल इंडिया की वफात, मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 12 मई 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

(अल्बकरः 154)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह तआला से धैर्य और नमाज़ के साथ मदद मांगो बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

मनुष्य के जीवन में कई समस्याएं आती हैं जिनका सामना करना पड़ता है। व्यक्तिगत रूप से कई सांसारिक समस्याओं में से इंसान गुज़रता है ऐसे हालात आते हैं जहां केवल धैर्य के कोई उपाय नहीं होता। माल औलाद और सांसारिक चीज़ों का नुकसान होता है। या तो दुनियादार रो पीटकर ऐसे हालात में यह नुकसान सहन कर लेता है और अक्सर यह बर्दाश्त नहीं होता क्योंकि सहन करने में भी जो एक दुनियादार जैसे सहन कर रहा है कई कुफ्र के शब्द और अल्लाह तआला से शिकवे के शब्द मुंह से निकल जाते हैं। या कुछ ऐसे होते हैं जो सांसारिक नुकसानों को सहन न करते हुए कई बार मानसिक संतुलन ही खो बैठते हैं लेकिन अल्लाह

तआला के कुछ बन्दे ऐसे भी होते हैं जिन्हें जान माल का नुकसान सहना पड़ता है या मानसिक प्रताड़ना से गुज़रना पड़ता है या शारीरिक यातनाएं मारधाड़ के रूप में सहनी पड़ती हैं सिर्फ इसलिए कि अल्लाह तआला का आदेश मानते हुए अल्लाह तआला के भेजे हुए एक नबी और अल्लाह तआला के फरस्तादे पर वे ईमान लाने वाले होते हैं। मानो उनके सांसारिक वित्तीय नुकसान भी ख़ुदा तआला के लिए हैं जान का नुकसान भी भी ख़ुदा तआला के लिए होते हैं, लेकिन वे यह सब नुकसान बिना किसी शिकवे के गुज़र जाते हैं। हाँ अल्लाह तआला से दुआ ज़रूर करते हैं कि हे अल्लाह अब जबकि हम यह सब कुछ तेरे भेजे हुए को मानने की वजह से वारिद किया जा रहा है तू हमारे धैर्य की शक्तियों को भी बढ़ा और ख़ुद ही मदद को आ और उन ज़ालिमों के ज़ुलमों से हमें बचा। तेरे लिए जिस परीक्षा से हम गुज़र रहे हैं इस में मज़बूत कदम भी प्रदान कर।

दूसरी दुनिया तो अम्बिया की तारीख़ पढ़ती है या सुनती है दूसरे मुसलमान पवित्र कुरआन में नबियों और उनके मानने वालों की बातें पढ़ते और सुनते हैं और प्रारंभिक मुसलमानों के साथ होने वाली घटनाओं और उनकी मज़लूमियत की बातें पढ़ते हैं या अपने उलमा से सुनते हैं लेकिन अहमदी मुसलमान वह है जो मसीह मुहम्मदी को मानने की वजह से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को मानने की वजह से इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए आने वाले अल्लाह तआला के फरस्तादे पर ईमान के कारण वास्तव में इस स्थिति से गुज़र रहे हैं जो दूसरों के लिए शायद धार्मिक अत्याचार की पुरानी घटनाएं और कहानियां हों।

कुछ और समूह और गिरोह भी कह सकते हैं कि हम भी धर्म की वजह से विरोधों और प्रतिद्वंद्विता का सामना कर रहे हैं लेकिन ये सब लोग ये जमाअतें या समूह अपने विरोधियों और शत्रुओं से मौका मिलने पर इसी तरह ज़ुल्म करके बदला भी ले लेती हैं जिस तरह के अत्याचार उन पर हुए होते हैं लेकिन अहमदी ही हैं जो मोमिन होने का नमूना दिखाते हुए कानून को अपने हाथ में न लेते हुए ज़ुलमों पर धैर्य करते हुए अल्लाह तआला के आगे झुकते हैं और उस से मदद मांगते हैं। अत: यह एक बहुत बड़ा अंतर अहमदी मुसलमानों और दुनिया के अन्य लोगों में है।

हम वे लोग हैं और हमें ऐसा होना चाहिए क्योंकि हम ने मसीह मौऊद को स्वीकार किया है जो सांसारिक परीक्षाओं और विरोधियों की प्रतिद्वंद्विता में न धैर्य का दामन हाथ से छोड़ने वाले हैं इसलिए न अपने ईमान से पीछे हटने वाले हैं। हम इस बात का एहसास रखने वाले हैं कि हमारे दु:खों का उपाय केवल अल्लाह तआला के पास है। हमें कष्टों के समय दुनियादारों के सामने नहीं बल्कि सभी शक्तियों के मालिक के सामने झुकना है, मदद मांगनी है। वही है जो हमें हमारे धैर्य और दुआ के कारण हमें इन परेशानियों से निजात दिलाने वाला है और उद्धार दिलाएगा। इंशा अल्लाह। वह कभी शुद्ध होकर अपनी ओर झुकने वालों को खाली हाथ वापस नहीं करता। वह जो उसके लिए, उसकी स्थापित जमाअत के लिए, बलिदान देते हैं उन्हें ज़रूर इनाम देता है। हम तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद का पालन करने वाले हैं और इसका एहसास रखने वाले हैं जिसमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मोमिन का मामला भी अजीब है। इस का सारा मामला भलाई पर आधारित है और यह स्थान केवल मोमिन को प्राप्त है। अगर उसे कोई ख़ुशी पहुंचती है तो यह उस पर धन्यवाद करता है अल्हम्दो लिल्लाह पढ़ता है और अल्लाह तआला के सामने सज्दा करता है तो यह बात उसके लिए अच्छे कार्य का कारण होता है और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो यह धैर्य करता है तो यह बात भी उसके लिए अच्छाई का कारण बन जाता है।

(सहीह मुस्लिम किताबुज्ज़ुहद हदीस 7500)

अल्लाह तआला के रास्ते में बड़ा कष्ट पहुँचना या बड़े बड़े कष्ट पहुंचना और उस पर धैर्य और दुआ बन्दे को भलाई का कारण बनाते ही हैं लेकिन अल्लाह तआला तो अपने बन्दों को सम्मानित वाली वह हस्ती है जो छोटे से छोटा कष्ट जो मोमिन को पहुंचता है इस से भी उसे नवाज़े बिना नहीं छोड़ता अत: इस बात का वर्णन फरमाते हुए एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मुसलमान को जो भी थकान, रोग, चिंता, संकट और शोक पहुँचता है, भले ही यह कोई कांटा भी चुभता है तो उसके बदले में अल्लाह तआला उसके कुछ गुनाहों को माफ कर देता है।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 5641)

अत: यह है हमारा वह रहीम व करीम ख़ुदा जो एक मोमिन को ज़रा ज़रा सी बात पर सम्मानित करता है एक धैर्य करने वाले और अल्लाह तआला के सामने झुकने वाले मोमिन के लिए तो अल्लाह तआला से ख़ुशखबरियां ही ख़ुशखबरियां हैं।

फिर एक और मौके पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें धैर्य और दुआ का महत्त्व बताते हुए और इसके बदले में अल्लाह तआला के व्यवहार का उल्लेख फरमाते हुए फरमाया कि अल्लाह तआला के रास्ते में बहने वाला रक्त का बिन्दु और रात के नफिल पढ़ते हुए अल्लाह तआला के भय से आंख से बहने वाले आंसू की बूंदों से अधिक कोई बिन्दु अल्लाह तआला को पसंद नहीं और न ही अल्लाह तआला को कोई घूंट ग़म के इस घूंट से ज्यादा पसंद है जो व्यक्ति धैर्य करके पीता है। अर्थात आदमी की शोक के समय जो हालत होती है कठिनाइयों के समय में जब इंसान धैर्य करता है और अल्लाह तआला के लिए धैर्य करता है तो अल्लाह तआला को वह धैर्य बेहद पसंद आता है और फरमाया इसी तरह अल्लाह तआला को क्रोध के घूंट से अधिक कोई घूंट पसंद नहीं है जो ग़ुस्सा दबाने के परिणाम से मनुष्य पीता है। क्रोध करने वाला घूंट नहीं गुस्सा दबाने वाला घूंट अल्लाह तआला को पसंद है।

(मुसन्निफ इब्ने अबी शीबा जिल्द 8 पृष्ठ 141 हदीस 108 प्रकाशन दारुल फिक्र बैरूत)

कई अवसर आते हैं मनुष्य क्रोध दबाता है धैर्य करता है और केवल अल्लाह तआला के लिए धैर्य करता है तो इससे वह अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने वाला बनता है।

अत: चाहे निजी मामले हों जिनकी वजह से किसी से हानि हो रही हो या जमाअत के मामलें हों यदि अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करनी है अगर अल्लाह तआला का प्यार पाना है तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह नियम उल्लेख किया है कि अल्लाह तआला के आगे झुकना और धैर्य का प्रदर्शन करना अल्लाह तआला की नज़दीकी दिलाता है और एक रिवायत में आता है कि अल्लाह तआला अपने निकटतम बन्दों के लिए बड़ा सम्मान रखता है और दुश्मन को पकड़ता है जो चोट और नुकसान पहुंचाने वाले होते हैं।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 6502)

अत: जिस मामले को अल्लाह तआला अपने हाथ में ले उसे बन्दे को अपने हाथ में लेने की ज़रूरत है। बल्कि यही नहीं कि अल्लाह तआला की तरफ झुकने वालों और धैर्य करने वालों के दुश्मनों से बदला लेता है बल्कि एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब बन्दे पर अत्याचार किया जाए और वह धैर्य से काम ले तो अल्लाह तआला उसे सम्मान देता है(सुनन तिर्मज़ी हदीस 2325) और जिसे ख़ुदा तआला सम्मान प्रदान करे इससे बड़ा एक बन्दा के लिए क्या सम्मान हो सकता है।

अत: आजकल जो जमाअत अहमदिया के व्यक्तियों पर विभिन्न देशों में सख्ती परेशानी और असुविधा के हालात हैं उस पर हमारा काम है कि धैर्य और दुआ के साथ अल्लाह तआला की मदद मांगते हुए उसके आगे झुकें। वही है जो कुफर के इमामों को पकड़कर हमें उनसे बचाने की, उनके मकरों से बचाने की, उनकी तदबीरों से बचाने की सबसे अधिक शक्ति रखता है और जमाअत के इतिहास में हम यही देखते आए हैं कि दुश्मन अपनी सारी शक्तियों और संसाधनों के बावजूद भी असफल और नामुराद ही हुआ है और जमाअत का कदम आगे ही बढ़ता चला गया है।

कठिनाइयों और तकलीफों के युग से जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा को भी गुज़रना पड़ा और उनसे होकर ही तो उपलब्धियां मिलीं तो हम क्या चीज़ हैं जो बिना किसी असुविधा के सहन किए उपलब्धियां प्राप्त कर लेंगे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस दर्दनाक दौर का ज़िक्र करते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"तेरह साल का समय कम नहीं होता इस समय में आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने जितने दु:ख उठाए उनका बयान भी आसान नहीं है। क़ौम की तरफ से पीड़ा और धमकी में कोई कसर नहीं छोड़ी जाती थी।" फरमाया कि "और उधर अल्लाह तआला द्वारा धैर्य की हिदायत होती थी"। (एक तरफ तो क़ौम तकलीफों पर तकलीफ दिए चली जा रही है दूसरी ओर अल्लाह तआला का हुक्म यह था कि सब्र करो और दृढ़ता दिखलाओ।) फरमाते हैं कि "और बार बार आदेश होता था कि जिस तरह पहले नबियों ने धैर्य किया है तू भी सब्र कर और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूर्ण धैर्य के साथ उनके कष्टों को सहन करते थे और तब्लीग़ में सुस्त न होते थे बल्कि कदम आगे ही पड़ता था।" फरमाया "और मूल यह है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का धैर्य पहले नबियों जैसा न था क्योंकि

वह एक सीमित क़ौम के लिए भेजे गए थे इसलिए उनकी पीड़ाएं और कष्ट भी इसी सीमा तक सीमित होती थीं लेकिन इसकी तुलना में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का धैर्य बहुत ही बड़ा था क्योंकि सबसे प्रथम तो अपनी ही क़ौम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरोधी हो गई और कष्ट पहुंचाने पर तत्पर हो गई और ईसाई भी दुश्मन हो गए।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 198-199 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: जब हम उस व्यक्ति की बैअत में आकर जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए आया है और सभी धर्मों पर इस्लाम की श्रेष्ठता साबित करने के लिए आया है और मुसलमानों की भी जो फिर्का बन्दिया हैं उन्हें समाप्त करके एक हाथ में जमा करके एक उम्मत बनाने के लिए आया है तो हमें भी अपनों और ग़ैरों, सब के विरोधों का सामना करना पड़ेगा। ग़ैर तो इस समय दुनिया के अधकितर देशों में इस तरह खुलकर रह विरोध नहीं करते जिस तरह इस्लाम के पहले दौर में मुसलमानों को उन विरोधों का सामना करना पड़ा, बल्कि ये लोग जो ग़ैर मुस्लिम हैं अगर वे विरोध करते हैं तो बड़े तरीके से और बड़ा सोच समझ कर इस्लाम पर हमले करने के ऐसे तरीके अपनाते हैं जो ये कह सकें कि देखो हम ने ज़ुल्म कोई नहीं किया लेकिन मुखालफ़तें बहरहाल कर रहे हैं। इन लोगों से प्रतिरक्षा भी हम ने इसी तरीके से करना है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो हथियार इस्लाम के विरोधी इस्लाम को समाप्त करने के लिए प्रयोग कर रहे हैं वही हम ने करने हैं और वह साहित्य और तब्लीग़ का हथियार है।

(उद्धरित चश्मा मारफत रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 93)

जब ग़ैर मुस्लिम दुनिया में इस्लाम फैलना शुरू होगा तो ग़ैर मुस्लिम देश भी जमाअत का विरोध करेंगे। जब वे देखेंगे कि यहां के स्थानीय लोग भी इस्लाम स्वीकार कर रहे हैं बल्कि कुछ जगह ऐसी घटनाएं हो भी जाती हैं। शुरू में कुछ चर्चों ने बड़ी हार्दिकता से हमें अपने फंगशन करने के लिए जगह दी लेकिन जब देखा कि लोगों के प्रवृत्ति बढ़ रही है तो विरोध शुरू हो गया और देने से मना कर दिया। उन्हें पता लग रहा है कि यह इस्लाम जो वास्तविक इस्लाम है,जमाअत अहमदिया जिस की तब्लीग़ करती है और फैला रही है यह एक समय में विजय प्राप्त कर लेगा और यह भाग्य में है कि वास्तविक इस्लाम जमाअत अहमदिया के माध्यम से ही फैलना है लेकिन इस समय मुल्ला जो है, मुसलमान लोग जो हैं और मुसलमानों के मुल्ला अपने मिम्बर के छिन जाने के डर से हर जगह विरोध में आगे हैं। इसी तरह अत्याचार कर रहे हैं जिस तरह पुराने ज़माने में धर्मों पर किए गए। राजनेता भी इस डर से कि मुल्ला के पीछे चलने वाला मतदाता हमारे हाथ से न जाता रहे वोट और सस्ती लोकप्रियता के लिए उनके पीछे चलते हैं वरना उन लोगों को तो धर्म का "क" "ख" भी नहीं पता। बहुमत शायद नमाज़ भी न पढ़ता हो बल्कि शायद ही कभी शुक्रवार की नमाज़ पर आते हैं और ईद की नमाज पढ़ने वाले हों लेकिन इस्लाम के सम्मान के नाम पर अहमदियों पर हमले ज़रूर करते हैं या विधान सभाओं में कानून पास कराने की कोशिश करते हैं।

पाकिस्तान में भी आजकल आज़ाद कश्मीर में विधान सभा में पाकिस्तानी मुल्ला के पदचिह्न पर वहाँ मुल्ला भी और वहाँ के राजनीतिज्ञ भी अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम घोषित करने का कानून कश्मीर विधान सभा में पेश कर रहे हैं बल्कि पेश हुआ है। बहरहाल ये लोग जो कुछ भी करना चाहते हैं कर लें पाकिस्तान की विधान सभा ने अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम करार देकर क्या पा लिया कौन सा जमाअत की तरक्की रुक गई। अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत तो नई नई क्षमताओं को प्राप्त करती चली जा रही है लेकिन जमाअत के लोगों को यह याद रखना चाहिए कि धैर्य के साथ अल्लाह तआला की मदद के लिए दुआ करना और उसके आगे झुकना अपनी नमाज़ों और इबादतों की रक्षा करना हर अहमदी का कर्त्तव्य है और यही बात जो है वह अल्लाह तआला के फज़्लों का अधिक वारिस बनाएगी।

फिर अल्जीरिया में विरोध है जैसा कि पिछले ख़ुत्बा में कई बार उल्लेख कर चुका हूँ कि अहमदियत के कारण कई लोग जेल में हैं जिन्हें एक साल से तीन साल तक की सज़ा दी गई है। दर्जनों अहमदियों की सज़ा की घोषणा हो चुकी हैं अब तक जेल में तो नहीं भेजा लेकिन किसी भी समय पकड़ कर उन्हें जेल में भेजा जा सकता है। विभिन्न प्रकार का प्रतिबंध हैं सिर्फ इसलिए कि वहाँ भी मुल्ला को अहमदियत की तरक्की खटक रही है और यह उनसे बर्दाश्त नहीं हो रहा।

इसी तरह बांग्लादेश में लगातार विरोध चलता रहता है। इंडोनेशिया में चलता है अरब देशों में चलता है लेकिन पिछले दिनों बांग्लादेश में एक जगह जिस का नाम शुहागी है ज़िला मैमन सिंह का यह कस्बा है यहाँ हमारी मस्जिद पर मौलवियों ने हमला किया और हमारे मुरब्बी मुस्तफीज़ुर्रहमान साहिब को चाकू से या खंजर के साथ वार कर के गंभीर रूप से घायल कर दिया। सारा शरीर उन का ज़ख्मी कर दिया। इतने गंभीर वार चाकू के साथ या कटार के साथ किए कि पूरा शरीर उन का छलनी कर दिया। पेट में भी ऐसी जगह वार हुए कहते हैं कि उन का गुर्दा भी बाहर आ गया। गर्दन पर वार किए बस महा धमनी कटने से बच गई। देखने वाले बताते हैं कि रक्त के फव्वारे निकल रहे थे बहरहाल पुलिस अवसर पर पहुंच गई। वह आई और आक्रमण कारियों से निकाल कर उन्हें ले गई और अस्पताल पहुंचाया। जमाअत के लोग भी पहुँच गए। ख़ुद्दाम तुरंत पहुंचे जिन्होंने खून दिया। अल्लाह तआला ने फज़ल किया कि मेडिकल सहायता पहुंच गई अस्पताल पहुंच गए जहां अच्छे डॉक्टर भी थे और अच्छा इलाज भी होता रहा। कई घंटे का उनका ऑपरेशन हुआ बहरहाल कल तक की जो सूचना है उसके अनुसार stable तो हैं लेकिन अभी हालत खतरे से बाहर नहीं है। यद्यपि कि थोड़ा सा होश में भी आ गए हैं और होश में आने के बाद बोल तो नहीं सकते थे लेकिन काग़ज़ कलम लेकर उन्होंने लिखकर जो बातें हैं इसमें भी असुविधा से गुज़रने के बावजूद भी एक मोमिन की शान है कि दूसरों की चिंता है और लिखकर यही दिया कि अमुक मुरब्बी साहिब की सुरक्षा का प्रबंध करें क्योंकि उन्हें भी खतरा है या अपने माता-पिता की चिंता जताई। अल्लाह तआला उन्हें स्वास्थ्य और सुरक्षा वाला लंबा जीवन भी प्रदान करे और पूर्ण और शीघ्र स्वस्थ प्रदान करे।

बहरहाल इस विरोधों के बारे में हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहले ही बता दिया था कि अगर अहमदियत स्वीकार की है तो इन कठिनाइयों से गुज़रना पड़ेगा। अत: एक अवसर पर इस बात का वर्णन फरमाते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"हमारी जमाअत के लिए भी इस तरह की कठिनाइयां जैसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय मुसलमानों को पेश आई थीं। अत: नई और सब से पहली मुसीबत तो यही है कि जब कोई व्यक्ति इस जमाअत में प्रवेश करता है तो शीघ्र ही दोस्त रिश्तेदार और समुदाय अलग हो जाते हैं यहां तक कि कभी कभी माता-पिता और भाई बहन भी दुश्मन हो जाते हैं। अस्सलामो अलैकुम तक नहीं करते और नमाज़ जनाज़ा पढ़ना नहीं चाहते। इस प्रकार की कई कठिनाइयां पेश आती हैं।" फरमाया कि "मैं जानता हूं कि कुछ कमजोर तबीयत आदमी भी होते हैं और ऐसी कठिनाइयों से वे घबरा जाते हैं लेकिन याद रखें कि इस प्रकार की कठिनाइयों का आना ज़रूरी है। तुम नबियों और रसूल से अधिक नहीं हो। उन पर इस तरह की कठिनाइयां और दु:ख आए और यह इसलिए आती हैं कि ख़ुदा तआला पर ईमान मज़बूत हो और पवित्र बदलाव का मौका मिले। दुआओं में लगे रहो। अत: यह आवश्यक है कि तुम नबियों और रसूलों का पालन करो और धैर्य के मार्ग को धारण करो। तुम्हारा कुछ भी नुकसान नहीं होता। वह दोस्त जो तुम्हें सच्चाई स्वीकार करने के कारण से छोड़ता है वह सच्चा दोस्त नहीं है।"(इस के कारण से चिंता करने की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह तुम्हारा सच्चा दोस्त नहीं है) "अन्यथा चाहिए था कि तुम्हारे साथ होता। तुम्हें चाहिए कि जो लोग केवल इसलिए तुम्हें छोड़ते और तुम से अलग होते हैं कि तुम ख़ुदा तआला के स्थापित सिलसिले में शामिल हो गए है उनसे दंगा या शरारत मत करो बल्कि उनके लिए अनुपस्थिति में दुआ करो।" (हमारा रवैया फिर भी यही हो कि दूसरे दुश्मनी कर रहे हैं हम ने उनकी अनुपस्थिति में पीछे से दुआ करनी है फरमाया यह दुआ करो) "कि अल्लाह तआला उन्हें भी वह अंतर्दृष्टि और अनुभूति प्रदान करे जो उसने अपनी कृपा से तुम्हें दी है। तुम अपने पवित्र नमूने और उत्कृष्ट चाल चलन से साबित करके दिखाओ कि तुम ने अच्छी राह धारण की है। (मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 203 प्रकाशन 203 यु.के) अहमदियत स्वीकार कर के कोई अपराध नहीं किया। कोई गुनाह नहीं किया। किसी गंद में नहीं गए बल्कि यह अच्छा रास्ता है जो तुम ने धारण किया है।

अत: यह वह प्रतिक्रिया है जो इन हमलों के बाद हम ने दिखानी है और हमें दिखानी चाहिए। बेशक कानून के तरीके से हम काम करते हैं उनके सुधार के लिए दुआ भी करते हैं लेकिन साथ ही जो दोषी हैं उनके लिए कानूनी तीरके भी करते हैं और करेंगे। यह भी अल्लाह तआला का हुक्म है लेकिन कभी धैर्य का दामन हाथ से नहीं छोड़ते और न छोड़ेंगे और न छोड़ना चाहिए और हर मुसीबत और मुश्किल में अल्लाह तआला के आगे ही हम झुकते हैं और इसी के आगे झुकेंगे। इंशा अल्लाह

लेकिन कई बार कुछ लोगों के बारे में मुझे शिकायतें मिलती हैं कि उन्हें ऐसी कठिनाइयां नहीं, यहाँ बैठे हुए हैं और यहां उन्हें तब्लीग़ के अवसर भी उपलब्ध

आते हैं। वे कई बार सीधा तब्लीग़ करते हुए कुछ लोगों को या सोशल मीडिया पर मौलवियों को प्रचार करते हुए या कई बार उनसे मुनाज़रा करते हुए ऐसी कठोर भाषा का प्रयोग करते हैं जो अहमदी के सम्मान योग्य नहीं है और कुछ लिखने वाले मुझे लिखते हैं कि अहमदियों के मुँह से ऐसी गंदी गालियां और ऐसी बात सुनकर बड़ी परेशानी होती है, जो उन लोगों के मुंह से अपने विरोधियों के लिए ग़ैर अहमदी मौलवियों के लिए या जिस से मुनाज़रा कर रहे हैं उसके लिए निकल रही होती हैं। बहरहाल ये बातें किसी भी एक अहमदी को शोभा नहीं देतीं। यह कहां तक सच है, यह अल्लाह तआला बेहतर जानता है मैंने ख़ुद तो नहीं देखा लेकिन मुझे लेखने वालों ने लिखा कि ऐसी जब बात होती है तो अहमदियों के मुकाबला में ग़ैर अहमदियों की भाषा अधिक नर्म होती है। यदि यह सच है तो फिर ऐसे अहमदियों से कहूंगा कि बेहतर है वह तब्लीग़ न किया करें। यह तब्लीग़ उन्हें अल्लाह तआला की नज़दीकी दिलाने के बजाय अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बना रहा होगा। जैसा कि हदीस में वर्णित हुआ है अल्लाह तआला को तो धैर्य और क्रोध का घूंट पीने वाला पसन्द है। हम तो घोषणा ही यह करते हैं कि गुस्सा आता ही उन्हें है जिनके पास कोई दलील न हो। अत: अगर हमारे पास दलील है तो फिर ग़ुस्सा का फिर कोई औचित्य नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए। आप फरमाते हैं कि

"देखो मैं इस बात के लिए भेजा गया हूँ कि तुम्हें बार बार निर्देश करूं कि हर प्रकार के दंगे और हंगामे के स्थानों से सावधान रहो और गालियां सुनकर भी सब्र करो। बुराई का जवाब भलाई से दो और कोई शरारत करने पर तत्पर हो तो बेहतर है तुम ऐसी जगह से खिसक जाओ और नर्मी से जवाब दो। कई बार ऐसा होता है कि एक व्यक्ति बड़े उत्साह के साथ विरोध करता है और विरोध में वे तरीके अपनाता है जो फसाद वाले तरीके हों जो सुनने वालों में उत्तेजना की तहरीक करते हों लेकिन जब सामने से नरम जवाब मिलता है और गालियों का मुकाबला नहीं किया जाता तो ख़ुद उसे शर्म आ जाती है।" (अत: हमारे लिए तो यह शिक्षा है कि गालियां भी हैं तो सहजता से जवाब दो।) फरमाया कि "ख़ुद उसे शर्म आ जाती है और वह अपनी हरकत पर अफसोस और परेशान होने लगता है" (कई बार ऐसी घटनाएं हुई हैं कि जिन विरोधियों की अच्छी प्रकृति थी उन को शर्म आई फरमाया कि) "मैं तुम से सच सच कहता हूं कि धैर्य को हाथ से न दो। धैर्य का हथियार ऐसा है कि तोपों से वह काम नहीं निकलता जो धैर्य से निकलता है। धैर्य ही है जो दिलों को जीत लेता है। बेशक याद रखें कि मुझे बहुत दु:ख होता है जब मैं यह सुनता हूं कि अमुक व्यक्ति इस जमाअत का हो कर किसी से लड़ा है। इस तरीका को मैं कभी पसंद नहीं करता और ख़ुदा तआला नहीं चाहता कि वह जमाअत जो दुनिया में एक नमूना ठहरेगी वह ऐसी राह धारण करे जो तक्वा की राह नहीं है बल्कि मैं तुम्हें यह भी बता देता हूँ कि अल्लाह तआला यहाँ तक इस बात का समर्थन करता है कि अगर कोई व्यक्ति इस जमाअत में से होकर धैर्य और सहनशीलता से काम नहीं लेता तो वह याद रखे कि वह इस जमाअत में सम्मिलित नहीं है।" फरमाया कि "बहुत अधिक उत्तेजना और उत्साह का यह कारण हो सकता है बहुत अधिक अगर कोई ग़ुस्सा दिलाए और जोश पैदा हो जो या उत्तेजना पैदा हो यही हो सकता है मुझे गंदी गालियां दी जाती हैं तो इस मामले को ख़ुदा को सौंप दो। तुम इसका फैसला नहीं कर सकते। मेरा मामला ख़ुदा पर छोड़ दो। तुम इन गालियों को सुनकर भी धैर्य और सहनशीलता से काम लो। तुम्हें क्या पता है कि मैं उन लोगों से कितनी गालियां सुनता हूँ। अक्सर ऐसा होता है कि गंदी गालियों से भरे हुए पत्र आते हैं और खुले कार्ड में गालियां दी जाती हैं बे रंग पोस्ट आते हैं जिनका राजस्व भी देना पड़ता है और फिर जब पढ़ते हैं तो गालियों का ढेर होता है ऐसी अश्लील गालियां होती हैं कि मैं वास्तव में जानता हूँ कि किसी रसूल भी ऐसी गालियां नहीं दी गई हैं और मैं विश्वास नहीं करता कि अबु जहल भी ऐसी गालियों का माद्दा हो लेकिन यह सब कुछ सुनना पड़ता है। जब मैं धैर्य करता हूँ तो तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम भी धैर्य करो। पेड़ से बढ़कर तो शाखा नहीं होती। तुम देखो कि यह कब तक गालियां देंगे। अंत में यही थक कर रह जाएंगे उनकी गालियाँ, उनकी शरारतें और परियोजनाएं मुझे कभी नहीं थका सकते। यदि मैं ख़ुदा तआला से न होता तो वास्तव में उनकी गालियों से डर जाता लेकिन मैं निश्चित जानता हूँ कि मुझे ख़ुदा ने तैनात किया है फिर ऐसी अपमानित बातों की क्या परवाह करूँ। यह कभी नहीं हो सकता। तुम विचार करो तुम ख़ुद विचार करो कि उनकी गालियों ने किसे नुकसान पहुंचाया है उन्हें या मुझे। उनकी जमाअत घटी है और मेरी बढ़ी है अगर यह गालियां कोई रोक पैदा कर सकती हैं" (जिस समय में आप ने लिखा फरमाया कि इस समय) "दो लाख से अधिक जमाअत कैसे पैदा हो गई है" (और आज उन गालियों के बावजूद अल्लाह तआला के फज़ल से दुनिया में 209 देशों में जमाअत की स्थापित है और यह फरमाया कि "यह लोग उनमें से ही आए हैं या कहीं और से?" (यह जो गालियां देने वाले थे उन्हीं लोगों में यह लोग आए हैं और जमाअत में शामिल हुए हैं।) "उन्होंने मुझ पर कुफ्र के फतवे लगाए लेकिन कुफ्र का फतवा का क्या प्रभाव हुआ जमाअत बढ़ी।" (कुफ्र के फतवों का नतीजा क्या निकला? कि जमाअत बढ़ गई) "यदि यह सिलसिला योजना से चलाया गया होता तो ज़रूर था कि इस फतवे का असर होता" (अगर इस जमाअत को बनाने का आगर मेरी कोई योजना होती तो फतवों का प्रभाव होता लेकिन कोई असर नहीं हुआ फरमाया) "और मेरे मार्ग में कुफ्र का फतवा बड़ी भारी रोक पैदा कर देता लेकिन जो बात ख़ुदा तआला से हो इंसान का समर्थ नहीं है कि उसे कुचल कर सके। जो कुछ परियोजना मेरे विरुद्ध किए जाते हैं पहचान करने वालों को हसरत ही होती है। मैं खोलकर कहता हूँ कि ये लोग जो मेरा विरोद्ध करते हैं एक भव्य नदी के सामने जो अपने पूरे ज़ोर से आ रही है अपना हाथ करते हैं और चाहते हैं कि वह इस से रुक जाए लेकिन इसका परिणाम स्पष्ट है कि वह बंद नहीं सकता। यह इन गालियों से रोकना चाहते हैं, लेकिन याद रखें कि कभी नहीं रुकेगा।" फरमाया "क्या शरीफ लोगों का काम है कि गालियां दे। मैं इन मुसलमानों पर अफसोस करता हूँ" फरमाया "मैं इन मुसलमानों पर अफसोस करता हूँ यह किस प्रकार के मुसलमान हैं जो ऐसी बेबाकी से ज़बान खोलते हैं। मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि ऐसी गंदी गालियां मैंने तो कभी किसी चौड़े चमार से भी नहीं सुनी जो मुसलमान कहलाने वालों से सुनी हैं इन गालियों में ये लोग अपनी स्थिति व्यक्त करते हैं और स्वीकार करते हैं कि वह अनाचारी और दुराचारी हैं। ख़ुदा तआला उनकी आँखें खोले और उन पर रहम करे।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 203-205 संस्करण 1985 ई यू.के)

इसलिए हमें याद रखना चाहिए कि अगर यह सही है कि सोशल मीडिया पर कुछ अहमदी चिड़ कर ग़लत रंग और सख्ती से उन लोगों के जवाब देते हैं तो ग़लत है। हमें याद रखना चाहिए कि इस तरह हम न केवल यह एक गुनाह नहीं कर रहे बल्कि हम इस गुनाह को भी करने वाले हो रहे हैं कि नई नस्ल को भी अहमदियत से दूर कर रहे हैं। कुछ युवाओं में विचार उठता है कि हमारे पास तर्क नहीं था शायद इसलिए हम कठोरता से जवाब दे रहे हैं हालांकि यह ग़लत है। अत: ऐसे लोगों को तुरंत अपने व्यवहार बदलने की जरूरत है।

जैसा कि मैंने कहा था कि गालियों का जवाब गालियों से देने का मतलब ही यह है कि हमारे पास दलील नहीं है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार विभिन्न तरीकों से हमें समझाया कि हमें धैर्य का दामन पकड़े रहना चाहिए और इस समय भी आपके सामने एक अंश प्रस्तुत करता हूँ। मैं यह बार बार इसलिए

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

रख रहा हूँ ताकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा सब पर स्पष्ट हो। फरमाया कि

"यह मुझे गालियां देते हैं लेकिन मैं उनकी गालियों की परवाह नहीं करता और न उन पर खेद करता हूँ क्योंकि वे इस विनीत के मुकाबला से आजिज आ गए हैं और अपनी विनम्रता और विनय को सिवाय इसके नहीं छुपा सकते हैं कि गालियां दें।" (दलील उनके पास रही नहीं। आजिज़ आ चुके हैं और इसलिए दलील न होने की वजह से वह गालियां देते हैं।) फरमाया कि "कुफ्र के फतवे लागाएं झूठे मामले बनाएँ और विभिन्न प्रकार के झूठ और बदनामी लगाएँ। वह अपनी सारी शक्तियों को काम में लाकर मेरा मुकाबला कर लें और देख लें कि अंतिम निर्णय किसके पक्ष में आता है। मैं उनकी गालियों की अगर परवाह करूँ तो वह मूल काम जो ख़ुदा तआला ने मुझे सौंपा है रह जाता है इसलिए जहां उनकी गालियों की परवाह नहीं करता मैं अपनी जमाअत को समझाता हूँ कि उन्हें उचित है कि उनकी गालियां सुनकर सहन करें। और हगगिज़ गाली का जवाब गाली न दें क्योंकि इस तरह बरकत जाती रहती है वह धैर्य और सहनशीलता का नमूना प्रकट करें और अपने आचरण दिखलाएँ। बेशक याद रखें कि बुद्धि और जोश में ख़तरनाक दुश्मनी है। जब जोश और ग़ुस्सा आता है तो बुद्धि कायम नहीं रह सकती लेकिन जो धैर्य करता है और विवेक का नमूना दिखाता है उसे एक नूर दिया जाता है जो उसकी बुद्धि और चिंता की ताकतों में एक नई रोशनी पैदा हो जाती है और फिर नूर से नूर उत्पन्न होता है ग़ुस्सा और जोश की स्थिति में चूंकि दिल में अंधेरे होते हैं इसलिए फिर अंधेरे से अंधेरे पैदा होता है।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 180 संस्करण 1985 ई यू.के)

अत: अगर बुद्धि और चिंता की ताकतों में वृद्धि करनी है, दिल और दिमाग़ में नूर पैदा करना है, तो ग़ुस्सा और जोश को हमें हर समय दबाने की ज़रूरत है तभी अल्लाह तआला की कृपा और बढ़ेंगी। जमाअत अहमदिया की तरक्की किसी जोश और क्रोध दिखाने से नहीं हुई अब तक जो तरक्की हो रही है यह तो अल्लाह तआला का वादा है कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को विजय देगा। अत: जब विजय उसने देनी है और इस काम में बरकत उसने ही डालनी है जो हम तब्लीग़ का भी करते हैं और दूसरा करते हैं तो हमें अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

हमें हमेशा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को सामने रखते हुए अपना जीवन गज़ारना चाहिए जिस में आपने फ़रमाया कि

"सांसारिक लोग कारणों पर भरोसा करते हैं"(उपस्थिति चीजों पर भरोसा करते हैं।) "लेकिन अल्लाह तआला इस बात के लिए मजबूर नहीं है कि कारणों का मोहताज हो। कभी चाहता है तो अपने प्रियजनों के लिए साधन के बिना भी काम कर देता है और कभी कारणों के द्वारा करता है और किसी समय ऐसा भी होता है कि बने बनाए कारणों को बिगाड़ देता है।" फरमाया " अत: अपने कर्मों को साफ करो" (हमें नसीहत फ़रमाई कि अपने कर्मों को साफ करो) "और ख़ुदा तआला को हमेशा याद करो और उपेक्षा न करो। जिस तरह भागने वाला शिकार जब जरा धीमा हो जाए तो शिकारी के नियंत्रण में आ जाता है उसी तरह ख़ुदा तआला के ज़िक्र से उपेक्षा करने वाला शैतान का शिकार हो जाता है।" (अत: यह उदाहरण सामने रखें कि जहां शिकार जो शिकारी से डर कर दौड़ता है अगर धीमा हुआ तो शिकारी के काबू में आ जाता है इसी तरह इंसान अगर अपनी इबादतों में, दुआओं में, अल्लाह तआला से मदद मांगने में लापरवाही करेगा तो शैतान का शिकार हो सकता।) फरमाया कि "तौब: को हमेशा जीवित रखो" (यह जरूर याद रखो कि तौब: को हमेशा जीवित रखो) "और कभी मुर्दा न होने दो।" (इस्तिग़फार को ज्यादा करो क्योंकि जिस अंग से काम लिया जाता है वही काम दे सकता है और जो बेकार छोड़ दिया जाए तो वह हमेशा के लिये निष्क्रिय हो जाता है। इसी तरह तौब: को भी गतिशील रखें ताकि वह बेकार न हो जाए। फरमाया कि "अगर तुम ने सच्ची तौबा नहीं कि वह उस बीज की तरह है जो पत्थर पर बोया जाता है और अगर वह सच्ची तौब: है तो वह इस बीज की तरह है जो उत्कृष्ट पृथ्वी पर बोया गया है और अपने समय पर फल लाता है।" फरमाया कि "इस तौब: में बड़ी-बड़ी कठिनाइयां हैं" (वहाँ कादियानी में आए कुछ लोगों को यह नसीहत फरमा रहे थे कि जब तुम यहाँ से जाओगे तो तुम्हें बहुत कुछ लोगों से सुनने पड़ेगा। लोग बड़ी बातें करेंगे कि तुम ने एक मजज़ोम, काफिर दज्जाल आदि की बैअत की है।) फरमाया कि "ऐसा कहने वालों के सामने जोश कभी मत दिखाना। हम तो अल्लाह तआला की तरफ से धैर्य के लिये तैनात किए गए हैं इसलिए चाहिए कि तुम उनके लिए दुआ करो कि ख़ुदा तआला उन्हें भी हिदायत दे और जैसे कि तुम को उम्मीद है कि वह तुम्हारी बातों को कभी स्वीकार नहीं करेंगे तुम भी उनसे मुंह फेर लो।" फरमाया "हमारे ग़ालिब के आने हथियार माफी तौब: धार्मिक अध्ययन का ज्ञान, ख़ुदा तआला की महानता को ध्यान में रखना और पांचों वक्त की नमाज़ों को अदा करने के लिए है। नमाज़ दुआ की स्वीकृति की कुंजी है जब नमाज़ पढ़ो तो उस में दुआ करो और उपेक्षा न करो और प्रत्येक बुराई चाहे वह अल्लाह के अधिकार से संबंधित हो चाहे बन्दों के अधिकार से संबंधित हो बचो।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 303 संस्करण 1985 ई यू.के)

अत: हमारा काम यह है कि अल्लाह तआला से संबंध पैदा करें और उसकी आज्ञाओं पर चलने की कोशिश हमेशा करते रहें। उसके रास्ते में कुर्बानियों को, धैर्य और दृढ़ता से वहन करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें धैर्य और दुआ के साथ अपनी ख़ुशी की राहों पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हम हमेशा अल्लाह तआला के फज़लों और उसके इनामों को प्राप्त करने वाले रहें।

नमाज़ के बाद एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय पी.पी नाज़मुद्दीन साहिब आफ पंगाडी केरल भारत का है जो 3 मई को ट्रेन की दुर्घटना में वफात पा गआ गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। अपनी कार पर जा रहे थे वहाँ दुर्घटना हो गई। कुरआन के प्रदर्शन को लेकर एक बैठक से लौट रहे थे तो यह हादसा पेश आया। हमेशा बड़े निष्ठावान इंसान थे। हमेशा धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देने वाले और कादियान के इज्तमाओं और जलसा सालाना और शूरा आदि में नियमित भागीदारी करने वाले थे। बड़े सक्रिय सदस्य थे। इस समय ज़िला सचिव माल की स्थिति से उन्हें काम की तौफ़ीक़ मिली। मृत्यु के समय भी बतौर उपाध्यक्ष अंसारुल्लाह भारत सेवा कर रहे थे। यह बड़ा लंबा समय दुबई में रहे और वहाँ पहले अमीर जमाअत के रूप में उन्होंने सेवा की तौफ़ीक़ पाई। उनके बड़े व्यापक संबंध थे और उन्हीं संबंधों को हमेशा जमाअत के लिए उन्होंने इस्तेमाल किया।.माअतके निज़ाम का बेहद पालन करने वाले और अपने साथियों से भी पालन करवाते थे। यह इबादत करने वाले कुरआन की तिलावत करने वाले बड़े विनम्र बड़ी परिष्कृत स्वभाव के मालिक थे और बड़ा लोगों को लाभ पहुंचाने वाले अस्तित्व थे। बच्चों का भी बड़े अच्छे ढंग से प्रशिक्षण किया हमेशा अच्छाई सिखाने की हिदायत करते और ख़िलाफत से जुड़े रहने की हिदायत देते। मरहूम मूसी भी थे। उनकी एक बेटी भी यहाँ रहती है और एक बेटा उनका दुबई में है। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने और ख़िलाफत और जमाअत से जुड़े रहने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

ख़ुत्बः जुमअः

इस्लाम की शिक्षा जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हमारी हर मामले में मार्गदर्शन करती है। अगर हम में से प्रत्येक इस मार्गदर्शन का पालन करने वाला बन जाए तो एक सुन्दर समाज स्थापित हो सकता है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सारा जीवन घर से लेकर व्यापक सामाजिक संबंधों तक सारा कुरआन के आदेश का पालन करने वाली थी। अतः वास्तविक सफलता तभी हो सकती है जब हम हर मामले में आदर्श को अपने सामने रखें। कई बार व्यक्ति बड़े बड़े मामलों में तो बड़े अच्छे नमूने दिखा रहा होता है, लेकिन ज़ाहिरी तौर पर छोटी दिखने वाली बातों को इस तरह नज़र अंदाज कर दिया जाता है जैसे उनका महत्त्व ही कोई न हो।

अतः अगर अपने जीवन को हम शांतिमय करना चाहते हैं यदि हम अल्लाह तआला के फज़्लों को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उन्हीं आदर्शों को अपनी जीवन का हिस्सा बनाने की ज़रूरत है जो हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर मामले में हमारे सामने पेश करे और फिर इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने उन्हें खोलकर हमारे सामने रखा और उस पर अनुकरण की तरफ ध्यान दिलवाया।

अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के बाद भी अज्ञानी लोगों की तरह ही रहना है उन मुसलमानों की तरह रहना है जिन्हें धर्म का बिल्कुल पता नहीं है अपनी पत्नी, बच्चों से वैसा ही व्यवहार करना है जो अज्ञानी लोग करते हैं फिर अपनी अवस्थाओं के बदलने का वादा करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का कोई फायदा नहीं।

अगर घरों को शांतिपूर्ण बनाना है अगर अगली नस्लों का प्रशिक्षण करना है और उन्हें धर्म से जुड़ा रखना है तो मर्दों को अपनी अवस्थाओं की तरफ ध्यान देना होगा।

भारत या पाकिस्तान से भी महिलाएं अपने पतियों के अत्याचारों के बारे में लिखती हैं दोनों जगह कादियान में भी और पाकिस्तान में भी नज़ारत इस्लाहो इरशाद और ज़ैली संगठनों को इस ओर ध्यान देना चाहिए और बाकी दुनिया में भी अपने प्रशिक्षण के कार्यक्रम की तरफ अधिक ध्यान देना चाहिए। तब्लीग़ कर रहे हैं और धार्मिक मस्ले सीख रहे हैं लेकिन घरों में बेचैनियां हैं इस सब ज्ञान और उपदेश का कोई फायदा नहीं है।

मर्दों के पिता के रूप में जो ज़िम्मेदारी है उसे भी समझने की ज़रूरत है। केवल यह न समझ लें कि यह बस माँ की जिम्मेदारी है कि बच्चे का प्रशिक्षण करे। बापों को भी बच्चों की प्रशिक्षण में योगदान करना चाहिए।

बापों की यह ज़िम्मेदारी भी है कि जहां बच्चों के प्रशिक्षण द्वारा व्यावहारिक ध्यान दें वहाँ उनके लिए दुआओं की तरफ भी ध्यान दें। यह भी ज़रूरी बात है।

जहां इस्लाम पिता को यह कहता है कि अपने बच्चों के प्रशिक्षण पर ध्यान दो और उनके लिए दुआ करो वहाँ बच्चों को भी आदेश है कि तुम्हारा भी कुछ कर्तव्य है। जब तुम वयस्क हो जाओ तो माता-पिता के भी तुम पर कुछ अधिकार हैं उन्हें तुम ने अदा करना है। यह रिश्तों के अधिकार की कड़ियां ही हैं जो एक दूसरे से जुड़ने से शांतिपूर्ण समाज पैदा करती हैं।

बहरहाल एक मर्द के विभिन्न हैसियतों से जो ज़िम्मेदारियां हैं उन्हें अदा करने की कोशिश करनी चाहिए। अपने घरों को एक ऐसा नमूना बनाना चाहिए जहां मुहब्बत और स्नेह का वातावरण हर समय बना रहे। एक मर्द पति भी है, पिता भी है, बेटा भी है इस दृष्टि से उसे अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए और मर्दों की बहुत सारी हैयितयतें और भी हैं लेकिन यह तीन हैसितयतें मैंने वर्णन की हैं

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 19 मई 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

इस्लाम की शिक्षा जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हमारी हर मामले में मार्गदर्शन करती है। अगर हम में से प्रत्येक इस मार्गदर्शन का पालन करने वाला बन जाए तो एक सुन्दर समाज स्थापित हो सकता है। आज ग़ैर मुस्लिम दुनिया जो इस्लाम और मुसलमानों के कर्म पर आपत्ति करती है इस आरोप के बजाय यह लोग इस्लाम की शिक्षा पर सही रंग में कर्म करने के कारण मुसलमानों के नमूने के उदाहरण देकर इस्लाम को मानने वाले हो जाते। कुरआन में अनगिनत आदेश दिया है लेकिन उन्हें एक जगह एक वाक्यांश में अल्लाह तआला ने यह कह कर जमा कर दिया कि لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (अल्अहज़ाबः 22) कि वास्तव में तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में नेक नमूना हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सारा जीवन घर से लेकर व्यापक सामाजिक संबंधों तक सारा कुरआन के आदेश का पालन करने वाली थी। परन्तु खेद है कि मुसलमानों की अधिकतर संख्या अल्लाह तआला के इस आदेश को पढ़ती तो है, इस बात को बड़े सम्मान के दृष्टि से देखती है परन्तु इस पर अनुकरण के समय इस का नज़र अंदाज़ कर दिया जाता है। अतः वास्तविक सफलता तभी हो सकती है जब हम हर मामले में आदर्श को अपने सामने रखें। कई बार व्यक्ति बड़े बड़े मामलों में तो बड़े अच्छे नमूने दिखा रहा होता है, लेकिन ज़ाहिरी तौर पर छोटी

दिखने वाली बातों को इस तरह नज़र अंदाज कर दिया जाता है जैसे उनका महत्त्व ही कोई न हो। जबकि इसके विपरीत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें इन बातों से बहुत ध्यान अपने उपदेशों में भी और अपने नमूने भी दिलवाई है।

अत: अगर अपने जीवन को हम शांतिमय करना चाहते हैं यदि हम अल्लाह तआला के फज़्लों को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उन्हीं आदर्शों को अपनी जीवन का हिस्सा बनाने की ज़रूरत है जो हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर मामले में हमारे सामने पेश करे और फिर इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने उन्हें खोलकर हमारे सामने रखा और उस पर अनुकरण की तरफ ध्यान दिलवाया।

इस समय मैं इस बारे में मर्दों के विभिन्न हैसियतों से ज़िम्मेदारियों के मामले में कुछ कहूंगा। मर्द की घर के मुखिया के तौर पर भी ज़िम्मेदारी है। मर्द की पति के रूप में भी ज़िम्मेदारी है। मर्द बतौर पिता भी ज़िम्मेदारी है फिर संतान के रूप में स्थिति भी ज़िम्मेदारी है। अगर हर आदमी अपनी जिम्मेदारियों को समझ ले और उन्हें अदा करने की कोशिश करे तो यह समाज के व्यापक शांति की स्थापना और प्रेम और भाईचारा की स्थापना करने का साधन बन जाता है। यही बातें औलाद के प्रशिक्षण का माध्यम बनकर शांति और मानवाधिकार स्थापित करनी वाली नस्ल के फैलने का माध्यम बन जाती हैं। घरों की शान्ति इन्हीं बातों से स्थापित हो जाती हैं।

आजकल कई घरों की समस्याएं और शिकायतें सामने आती हैं जहां मर्द अपने आप को घर का मुखिया समझकर यह समझते हुए कि मैं घर का मुखिया हूँ और बड़ा हूँ और मेरे सारे अधिकार हैं न अपनी पत्नी का सम्मान करता है और उसे वैध अधिकार देता है, न ही औलाद के प्रशिक्षण का हक़ अदा करता है केवल नाम का सर्वोच्च है बल्कि ऐसी शिकायतें भी भारत से भी और पाकिस्तान से भी कुछ महिलाओं की तरफ से भी हैं कि पतियों ने पत्नियों को मार मार कर शरीर पर नील डाल दिए या घायल कर दिया। मुंह सुजा दिए बल्कि कुछ लोग तो इन देशों में रहते हुए भी ऐसी हरकतें कर जाते हैं तो बच्चों और बच्चियों पर अत्याचार की सीमा तक कुछ पिता व्यवहार कर रहे होते हैं। अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के बाद भी अज्ञानी लोगों की तरह ही रहना है इन मुसलमानों की तरह रहना है जिन्हें धर्म का बिल्कुल पता नहीं है अपने बच्चों पत्नी बच्चों से वैसा ही व्यवहार करना है जो अज्ञानी लोग करते हैं फिर अपनी अवस्थाओं के बदलने का वादा करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का कोई फायदा नहीं।

क्या मर्द जो ख़ुदा का हक़ अदा करने की उनकी ज़िम्मेदारी है और जो व्यावहारिक हालत गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उन पर ज़िम्मेदारी है उसे अदा कर रहे हैं यदि यह अदा कर रहे हों तो यह फिर हो ही नहीं सकता कि कभी उनके घरों में अत्याचार हो।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो सब से पहले घर के मुखिया होने के नाते तौहीद की स्थापना का महत्त्व अपने बीवी बच्चों पर स्पष्ट फरमा कर उस पर अमल करवाया लेकिन यह काम भी प्यार और मुहब्बत से करवाया। डंडे के जोर पर नहीं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो घर के मुखिया होने और दुनिया के सुधार और शरीयत के स्थापना की सारी व्यस्तता होने के बावजूद अपने घर वालों के हक़ अदा किए और प्यार और नरमी और प्रेम से यह हक़ अदा किए। घर का मुखिया होने का अधिकार ऐसे अदा किया कि पहले यह एहसास दिलाया कि तुम्हारी ज़िम्मेदारी तौहीद की स्थापना है। अल्लाह तआला की इबादत है और इसलिए हज़रत आयशा कहती हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात को नफिल के लिए उठते थे और फिर सुबह नमाज़ से कुछ पहले हमें पानी के छींटे मारकर उठाते थे कि नफिल पढ़ो। इबादत करो। अल्लाह तआला का वह हक़ अदा करो जो अल्लाह तआला का अधिकार है

(बुख़ारी किताबुल वितर हदीस 997)

फिर आप अपने घर वालों के हक़ अदा कैसे करते थे। वह काम जो पत्नियों के करने वाले थे उनमें भी उनका हाथ बंटाते थे। अत: हज़रत आयशा ही फरमाती हैं कि जितना समय आप घर पर होते थे घर वालों की मदद और सेवा में व्यस्त रहते थे यहाँ तक कि आप को नमाज़ का बुलावा आ जाता और आप मस्जिद पधारते।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 676)

अत: यह है वह उस्वा जो हम ने अपनाना है और हमें अपनाना चाहिए न कि पत्नियों ऐसा व्यवहार जो अत्याचार के बराबर हो। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा अपने घरेलू कार्यों का विवरण बयान फरमाते हुए फरमाती हैं कि इसी तरह अपने कपड़े भी ख़ुद सी लेते थे जूते टांक लिया करते थे घर का डोल आदि मरम्मत कर लिया करते थे।

(उमदतुल कारी शरह सहीह अल्बुख़ारी हदीस 676 जिल्द 5 पृष्ठ 298)

अत: इन नमूनों को सामने रखते हुए बहुत से परिवारों को अपना आत्मनिरीक्षण करना चाहिए और इस पर ध्यान देना चाहिए कि क्या इनके घरों में यह व्यवहार हैं यह व्यवहार है?

अपने सहाबा को पति के कर्तव्यों और उसके व्यवहार की गुणवत्ता के बारे में एक अवसर पर फरमाया जो हजरत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि मोमिनों में पूर्ण ईमान वह है जिस की चरित्र अच्छे हैं और तुम में से चरित्र के अनुसार सबसे अच्छा वह है जो अपनी औरतों के लिए बेहतर है।

(सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 1162)

अत: हर व्यक्ति जो अपनी पत्नियों से अच्छा व्यवहार नहीं है समीक्षा करनी चाहिए कि अच्छे आचरण और पत्नियों से अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन केवल ज़हरी अच्छा चरित्र नहीं है बल्कि आपने फ़रमाया कि ईमान की गुणवत्ता की ऊंचाई का भी संकेत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पति के कर्तव्यों और पत्नियों से हुस्ने सुलूक का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं कि फहशा (अनाचार) को छोड़कर सभी टेड़ी आदतें और तल्खी महिलाओं की सहन करनी चाहिए और फरमाया कि हमें तो पूर्णता बेशर्मी मालूम होती है कि मर्द होकर महिला से जंग करें। हम को ख़ुदा ने मर्द बनाया है और वास्तव में यह हम पर नेअमत का पूर्ण होना है उसका धन्यवाद है कि हम महिलाओं को आराम और नरमी का व्यवहार करें।

एक बार एक कठोर व्यवहार और बुरी भाषा का उल्लेख हुआ कि वह अपनी पत्नी से बड़ा सख्ती से पेश आता है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम इस बात से बहुत दु:खी हुए बहुत केद व्यक्त किया। फरमाया हमारे मित्रों को ऐसा नहीं होना चाहिए। फिर लिखने वाले लिखते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम बहुत देर तक उसके बाद औरतों से व्यवहार के बार में बात कहते रहे और अंत में फरमाया कि मेरा यह हाल है कि एक बार मैं अपनी पत्नी पर तेज़ आवाज़ में बात की थी (ज़ोर से बोला था) और मैं महसूस करता था कि वह ऊंची आवाज़ दिल के दुख से मिली हुई है। (ज़ोर से मैं बोला था और सोचा कि शायद इसमें दिल का कोई दुख भी शामिल है)और इस के अतिरिक्त कोई दिल दुखाने वाली कोई बात मुंह से नहीं निकाली थी। (लेकिन इसके बावजूद भी आप फरमाते हैं कि) इस के बाद मैं बहुत देर तक इस्तिग़फार करता रहा और बड़ी विनम्रता और विनय से नफलें पढ़ीं और कुछ दान भी दिया कि बीवी पर यह सख्ती किसी अल्लाह तआला के छुपे हुए आदेश के अवहेलना का परिणाम है।

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 1.2 प्रकाशन 1985 ई)

तो यह है नमूना आप का। और फिर एक दोस्त के सख्ती से पेश आने पर आप ने बड़ी चिंता और दर्द से व्यक्त किया और यह नसीहत भी फरमाई कि वे लोग जो अपनी पत्नियों से ज़रा ज़रा सी बात पर लड़ते झगड़ते हैं हाथ उठाते हैं उन्हें कुछ होश करनी चाहिए। यह हाथ अठाना तो खैर अलग रहा जैसा कि मैंने कहा कि घायल भी कर देते हैं उनके लिए तो बहुत ही चिंता का क्षण है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसार उन लोगों का तो ईमान भी पूर्ण नहीं है उन्हें अपने ईमान की चिंता करनी चाहिए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जो इरशाद था इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी चिंता हुई कि जिस के ईमान का वह उच्च गुणवत्ता नहीं है फिर तो वह कई जगह ठोकर खा सकता है।

अत: जैसा कि मैंने कहा कि यह प्रतीत होता है छोटी दिखने वाली बातें हैं परन्तु यह छोटी नहीं हैं। इन देशों में तो पुलिस तक मामले चले जाते हैं और फिर जमाअत की बदनामी होती हैं ऐसे लोग फिर सांसारिक सज़ा भी भुगतते हैं और अल्लाह तआला की नाराज़गी भी मोल लेते हैं।

कुछ मर्द कह देते हैं कि महिला में अमुक अमुक बुराई है जिसकी वजह से हमें सख्ती करनी पड़ी। इस पहलू से मर्दों को पहले अपने समीक्षा लेनी चाहिए कि क्या वे धर्म के मानकों को पूरा करने वाले हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ऐसे ही मर्दों को नसीहत देते हुए फरमाते हैं कि "मर्द अगर नेक न हो तो महिला कब नेक हो सकती है।"(पहली शर्त तो यही है कि मर्द नेक हो तभी उसकी पत्नी भी नेक होगी।) फरमाया कि "हाँ अगर मर्द सालेह बने तो महिला भी सालेहा हो सकती है।" फरमाया कि "कथन से महिला को नसीहत न देनी चाहिए बल्कि कर्म से अगर नसीहत दी जाए तो इसका असर होता है।" केवल बातों की नसीहत न करो। केवल डांट फटक न करो बल्कि अपने कर्म से साबित करो कि तुम नेक हो और तुम्हारा हर कदम अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर चलने वाला है। फरमाया कि ऐसी नसीहत जो कर्म से होगी इसका असर होता है फरमाया कि "महिला तो दरकिनार और भी

कौन है जो केवल कथन से किसी मानता है" (कोई नहीं मानता जब तक कर्म न हो।) "अगर मर्द कोई कमी या त्रुटि अपने अंदर रखेगा तो औरत हर समय उस पर गवाह है।" फरमाया कि "जो व्यक्ति भगवान ख़ुदा से नहीं डरता तो औरत उसे कैसे डरे।? न ऐसे मौलवियों का उपदेश असर करता है न पति का। प्रत्येक अवस्था में व्यावहारिक नमूना असर करता है।" फरमाते हैं कि "भला जब पति रात को उठ उठकर दुआ करता है, रोता है, तो महिला एक दो दिन तक देखेगी अंत में एक दिन उसे भी विचार आएगा और ज़रूर प्रभावित होगी।" फरमाते हैं कि "महिला में प्रभावित होने का माद्दा बहुत होता है..... उनको ठीक करने के लिए कोई मदरसा भी काफी नहीं हो सकता।" (औरतों के सुधार के लिए किसी स्कूल की ज़रूरत नहीं है किसी संस्था की ज़रूरत नहीं है।) जितना पति का व्यावहारिक काफी होता है।" (अगर सुधार करना है तो पति अपना सुधार कर लें अपने व्यावहारिक नमूना दिखाएँ उनका सुधार हो जाएगा।) आप फरमाते हैं "ख़ुदा ने मर्द तथा औरत दोनों का एक ही अस्तित्व कहा है। यह मर्दों का अत्याचार है कि वह महिलाओं को ऐसा मौका देते हैं कि वह उन्हें त्रुटि पकड़ें। उन्हें चाहिए कि महिलाओं को कभी ऐसा मौका न दें कि वे यह कह सकें कि अमुक बुराई करता है।" (कभी ऐसा मौका मर्दों को नहीं देना चाहिए कि महिला यह कहे कि तुम में अमुक बुराई है तुम तो यह बुराइयां करते हो। बल्कि फ़रमाते हैं कि इंसान को इतना पवित्र होना चाहिए कि "महिला टकरें मार मार कर थक जावे और किसी बुराई का उसे पता मिल ही न सके तो उस समय उस की नेती का विचार होता है और वह धर्म को समझती है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 207-208 प्रकाशन 1985 ई)

जब ऐसी स्थिति हो कि तलाश करने के बावजूद मर्द में कोई बुराई नज़र न आए तो तब महिला अगर धार्मिक नहीं भी है तो धर्म की ओर ध्यान उत्पन्न होगा। यहाँ तो मैंने देखा है कि महिलाएं अधिक धार्मिक होती हैं कई बार यह शिकायत करती हैं कि हमारे पति की धर्म की ओर ध्यान नहीं।

एक तरफ तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन मर्दों यह उम्मीदें हैं जो आप की बैअत में आए और दूसरी तरफ हम देखते हैं कि कई मर्द हैं जैसा कि मैंने कहा कि जिनकी शिकायतें औरतें लेकर आती हैं कि नमाज़ में यह मर्द सुस्त हैं जमाअत के साथ तो अलग रही घर में भी नमाज़ नहीं पढ़ते। धर्म का ज्ञान मर्दों का कमज़ोर है। चन्दों में कई घरों के मर्द कमजोर हैं। टीवी पर व्यर्थ और बेहूदा कार्यक्रम देखने की मर्दों की शिकायतों हैं। बच्चों के प्रशिक्षण में ध्यान न देने की शिकायत मर्दों के बारे में है और अगर कभी घर का मुखिया बनने की कोशिश करेंगे भी बाप बनने की कोशिश करेंगे तो सिवाय डांट मारधाड़ के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। महिलाएं मर्दों से सीखने के बजाय कई घरों में महिलाएं मर्दों को सिखा रही होती हैं या उन्हें ध्यान दिला रही होती हैं ताकि बच्चे बिगड़ न जाएं। जिन घरों में भी बच्चे गैर प्रशिक्षण पीड़ित हैं वहाँ आमतौर कारण मर्दों का अनदेखी करना या पत्नी और बच्चों पर व्यर्थकी सख्ती है। कई बच्चे भी कई बार आ कर मुझे शिकायत कर रहे होते हैं कि हमारे पिता का हमारी माँ या हमसे व्यवहार अच्छा नहीं है।

तो अगर घरों को शांतिपूर्ण बनाना है अगर अगली नस्लों का प्रशिक्षण करना है और उन्हें धर्म से जुड़ा रखना है तो मर्दों को अपनी अवस्थाओं की तरफ ध्यान देना होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मर्दों को ध्यान दिलाते हुए अधिक कहते हैं कि "मर्द अपने घर का इमाम होता है तो अगर वही बुरा प्रभाव स्थापित करता है तो कितना बुरा प्रभाव पड़ने की उम्मीद है।" (इस से कर्म से बुरा प्रभाव स्थापित हो रहा है तो आगे फिर पीढ़ियों में भी बुरा प्रभाव पड़ता चला जाएगा।) फरमाया कि "मर्द को चाहिए कि अपनी शक्तियों को यथा उचित और हलाल अवसर पर उपयोग करे जैसे एक शक्ति गज़ब की है"(ग़ुस्सा है) "जब वह मध्यम से अधिक हो तो पागलपन का आरम्भ होती है।" (क्रोध आदमी की प्रकृति में होता है। एक आदमी में होता है लेकिन जब अत्यधिक बढ़ जाए तो वह जुनून या पागलपन का आरम्भ बन जाती है।) फरमाया कि "जुनून और इसमें काफी कम अंतर है जो आदमी शीघ्र गज़ब में आता है इस से हिक्मत का स्रोत छीन लिया जाता है। बल्कि यदि कोई विरोधी हो तो इससे भी गज़ब के अधीन होकर बातचीत न करे।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 208 प्रकाशन 1985 ई)

घर वालों की बात तो अलग रही विरोधियों से भी इस तरह क्रोधित होकर बातें नहीं करनी चाहिए। अत: यह है गुणवत्ता कि घर में पत्नी तथा बच्चों पर ग़ुस्सा नहीं करना और यह ग़ुस्सा तो अलग रहा अगर कोई विरोधी है तो इससे भी उग्र होकर और बुद्धि से खाली होकर बात नहीं करनी। विरोधी की बात को अस्वीकार करने के लिए भी मोमिन के मुंह से गंदे और क्रोध से भरे हुए शब्द नहीं निकलने चाहिए।

जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि भारत या पाकिस्तान से भी महिलाएं अपने पतियों के अत्याचारों के बारे में लिखती हैं दोनों जगह कादियान में भी और पाकिस्तान में भी नज़ारत इस्लाहो इरशाद और ज़ैली संगठनों को इस ओर ध्यान देना चाहिए और बाकी दुनिया में भी अपने प्रशिक्षण के कार्यक्रम की तरफ अधिक ध्यान देना चाहिए। तब्लीग़ कर रहे हैं और धार्मिक मस्ले सीख रहे हैं लेकिन घरों में बेचैनियां हैं इस सब ज्ञान और उपदेश का कोई फायदा नहीं है।

महिला का मनोविज्ञान और वह कैसे मर्द को देख रही है इसके बारे में बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"मर्द की उन सभी बातों और विशेषताओं को महिला देखती है। वह देखती है कि मेरे पति में अमुक अमुक विशेषताएं तक्वा की हैं जैसे उदारता नम्रता धैर्य और जैसे उसे (अर्थात महिला को) जाँच का मौका मिलता है वह किसी दूसरे को नहीं मिल सकता।" घर में प्रत्येक दिन देख रही होती है।) फरमाया कि "इसीलिए औरत को सारिक भी कहा है क्योंकि यह अंदर ही अंदर चरित्र की चोरी करती रहती है यहां तक कि एक समय पर पूरा चरित्र प्राप्त कर लेती है।" फरमाते हैं कि "एक व्यक्ति का उल्लेख है वह एक बार ईसाई हुआ" (इस्लाम छोड़कर) "तो महिला भी उसके साथ ईसाई हो गई। शराब आदि आरम्भ में शुरू फिर पर्दा भी छोड़ दिया ग़ैर लोगों से भी (वह स्त्री) मिलने लगी। (उसकी पत्नी।) पति ने फिर इस्लाम की तरफ़ रुजू किया" (कुछ समय बाद पति को ख्याल आया कि मैंने इस्लाम छोड़ कर भूल की थी। फिर इस्लाम की तरफ़ रुजू किया) "तो उसने पत्नी को (भी) कहा कि (अब) तू भी मेरे साथ मुसलमान हो जा । उसने कहा अब मेरा मुसलमान होना मुश्किल है ये आदतें जो शराब आदि और आज़ादी की पड़ गई हैं यह नहीं छूट सकतीं।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 207-208 प्रकाशन 1985 ई)

यह तो एक सीमा है कि मर्द इस्लाम से भी दूर हट गया और दूर होकर ईसाई हो गया लेकिन कई मर्द ऐसे भी होते हैं कि इस्लाम तो नहीं छोड़ते नाम की हद तक इस्लाम से जुड़े रहते हैं अपने आप को मुसलमान ही कहते लेकिन आज़ादी के नाम पर कई ग़लत हरकतों में लिप्त हो जाते हैं जैसा कि पहले भी उल्लेख कर आया हूँ और फिर उनकी देखा देखी या मर्द के कहने पर औरतें भी आज़ादी के नाम पर उसी माहौल में ढल जाती है। फिर कुछ समय बाद मर्दों को विचार आता है कि पत्नी अधिक आज़ाद हो गई है और जब उसे इस आज़ादी से वापस लाने की कोशिश करता है तो लड़ाइयां शुरू हो जाती हैं। फिर मार धाड़ भी यहां होती है। यहाँ भी यही किस्से और घटनाएं होती हैं और जैसा कि मैंने कहा कि इन देशों में पुलिस फिर तुरंत बीच में आ जाती है महिलाओं और बच्चों के अधिकारों की संस्था जो हैं वे बीच में आ जाती हैं और फिर घर भी टूटते हैं और बच्चे भी बर्बाद होते हैं। अत: इससे पहले कि घर टूटें और बच्चे बर्बाद हों ऐसे मर्दों को अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए जो उन पर अपनी पत्नी और बच्चों के बारे में धर्म डालता है और जो इस्लाम ने उनकी जिम्मेदारियों निर्धारित की हैं।

औरतों के अधिकार और उनसे व्यवहार के बारे में एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

"महिलाओं के अधिकार की जैसी सुरक्षा इस्लाम ने की है वैसी अन्य धर्म ने बिल्कुल नहीं की। थोड़े शब्दों में कह दिया कि وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ (अल्बकर: 229) कि जैसे मर्दों के महिलाओं पर अधिकार हैं वैसे ही महिलाओं के मर्दों पर अधिकार हैं। फरमाया कि कुछ लोगों का हाल सुना जाता है कि इन बैचारियों को पैर की जूती की तरह जानते हैं और सबसे अपमानित सेवाएं उनसे लेते हैं। गालियां देते हैं। हिकारत की नज़र से देखते हैं और पर्दे के आदेश ऐसे अवैध तरीके से बरतते हैं कि उन्हें जीवित दफन कर देते हैं" अर्थात ऐसी सख्ती है हाथ मुंह के पर्दा की इस प्रकार सख्ती है कि सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। ऐसी सख्ती नहीं होनी चाहिए लेकिन इस्लाम बड़ा सिमटा धर्म है। दूसरी ओर महिलाओं को भी मध्य मार्ग अपनाना चाहिए कि पर्दे की सुविधा के नाम पर अत्यधिक ही आज़ादी प्राप्त न कर लें और यह भी देखने में आया है कि कुछ अत्यधिक आज़ाद हो गई हैं और नाममात्र पर्दा रह गया है। यह भी ग़लत है। अत: औरतें भी याद रखें कि सिर और शरीर को लज्जा की ज़रूरत को पूरा करते हुए ढांपना चाहिए यही अल्लाह तआला का हुक्म है इसका ख्याल रखना चाहिए।

पति तथा पत्नि के संबंध की गुणवत्ता क्या होनी चाहिए। इस बात को बयान

फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"चाहिए कि पत्नियों से पतियों का ऐसा संबंध हो जैसे दो सच्चे और वास्तविक दोस्तों का होता है। इंसान के उत्तम स्वभाव और अल्लाह तआला से संबंध की पहली गवाह तो यही महिलाएं होती हैं अगर उन्हीं से उनके रिश्ते अच्छे नहीं हैं तो कैसे संभव है कि अल्लाह तआला से सुलह हो।" (घर में ही संबंध ठीक नहीं तो यह भी मुश्किल है कि अल्लाह तआला से भी सुलह हो और अल्लाह तआला के आदेश का पालन किया हो।) फरमाया कि "रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ तुम में से अच्छा वह है जो अपने परिवार के लिए अच्छा है।(मल्फूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 417-418 प्रकाशन 1985 ई) अत: यह हैं वह गुणवत्ता जो हर आदमी को अपनाना चाहिए।

फिर मर्दों के पिता के रूप में जो ज़िम्मेदारी है उसे भी समझने की ज़रूरत है। केवल यह न समझ लें कि यह बस माँ की ज़िम्मेदारी है कि बच्चे का प्रशिक्षण करे। बेशक एक उम्र तक बच्चे का समय माँ के साथ बीतता है और बहुत बचपन की माताओं का प्रशिक्षण बच्चे को प्रशिक्षित करने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है लेकिन इससे मर्द अपने कर्तव्यों से छूट नहीं जाते। बापों को भी बच्चों के प्रशिक्षण में योगदान करना चाहिए। खासकर लड़के जब सात आठ साल की उम्र तक पहुँच हैं उसके बाद फिर वह बापों के ध्यान और दृष्टि के मोहताज होते हैं अन्यथा विशेष रूप से इस पश्चिमी वातावरण में बच्चों के बिगड़ने के अधिक संभावना हो जाती हैं। यहाँ भी वही नियम लागू होगा जो महिलाओं के संदर्भ में पहले उल्लेख हो चुका है कि मर्दों को बापों को अपने नमूने दिखाने और स्थापित करने की ज़रूरत है। बापों को बच्चों को जहां सम्मान करने की जरूरत है ताकि उनके आचरण अच्छे हों वहाँ उन पर गहरी नज़र रखने की भी ज़रूरत है ताकि वह परिवेश के बुरे प्रभाव से बचकर रहें।

फिर बापों का बच्चों से संबंध बच्चों को एक सुरक्षा का भी एहसास दिलाता है। कई पिता बच्चों के व्यवहार के बारे में शिकायत करते हैं कि उनमें झिझक पैदा हो गई है या विश्वास की कमी पैदा हो गई है या ग़लत बात अधिक करने लग गए हैं और जब बापों को कहा जाए कि बच्चों के अधिक करीब हों और उनके व्यक्तिगत संबंध पैदा करें, दोस्ताना संबंध बनाएं तो आमतौर देखने में आया है तो इसके परिणाम में बच्चे में जो कमज़ोरियां हैं यह दूर होना शुरू हो जाती हैं। अत: बच्चों में बाहर के परिवेश में सुरक्षा का एहसास दिलाने के लिए आवश्यक है कि पिता कुछ समय बच्चों के साथ बाहर गुज़ार आए।

फिर बापों की यह ज़िम्मेदारी भी है कि जहां बच्चों के प्रशिक्षण द्वारा व्यावहारिक ध्यान दें वहाँ उनके लिए दुआओं की तरफ भी ध्यान दें। यह भी ज़रूरी बात है। प्रशिक्षण के वास्तविक फल तो अल्लाह तआला की कृपा से लगते हैं लेकिन जो अपनी कोशिश है वह आदमी को ज़रूर करनी चाहिए।

प्रशिक्षण के तरीके और बच्चों के लिए दुआओं की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मार्गदर्शन और सच्चा प्रशिक्षण ख़ुदा तआला का कार्य है।" (वास्तविक प्रशिक्षण जो अल्लाह तआला का काम है।) "कठिन पीछा करना और एक बात पर ज़ोर को सीमा से गुज़ार देना यानी बात-बात पर बच्चों को रोकना और टोकन दिखाता है कि मानो हम ही हिदायत के मालिक हैं और हम इसे एक इच्छा के अनुसार एक पथ पर ले आएंगे यह एक प्रकार का छुपा हुआ शिर्क है इससे हमारी जमाअत को बचना चाहिए।" अपने बारे में फरमाया कि "हम तो अपने बच्चों के लिए दुआ करते हैं और सरसरी तौर पर नियमों और शिक्षा के शिष्टाचारों की पाबन्दी कराते हैं।" (शिक्षा हमारी क्या है? इस के शिष्टाचार क्या हैं? क्या नियम हैं? इस की पाबन्दीकी तरफ ध्यान दिलाते रहें।) "बस इस से अधिक नहीं और फिर अपना पूरा भरोसा अल्लाह तआला पर रखते हैं जैसा किसी में नेकी का बीज होगा समय पर हरा हो जाएगा।"

(मल्फूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 5 प्रकाशन 1985 ई)

इसलिए हमें याद रखना चाहिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब कहते हैं कि हम दुआ करते हैं तो उन दुआओं की गुणवत्ता भी बहुत बुलंद हैं। इस बात को मामूली नहीं समझना चाहिए और दुआ की यह गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए हमें इतनी अधिक मेहनत करने की ज़रूरत है। यह कोई मामूली बात नहीं है इसलिए इस तरफ बापों को ध्यान देना चाहिए।

बतौर पिता बच्चों के प्रशिक्षण की तरफ कैसे और कितना ध्यान देना चाहिए इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बड़ा विस्तार से एक जगह बयान फरमाते हैं कि "कुछ लोगों का यह भी मानना है कि बच्चों के लिए कुछ माल छोड़ना चाहिए। मुझे आश्चर्य आता है कि माल छोड़ने का तो उन्हें विचार आता है लेकिन यह विचार नहीं आता कि इसका चिंता कि औलाद सालेह हो तालेह न हो" (यानी दुष्ट और बुरी न हो बल्कि सालेह और नेक हो) फरमाया कि "लेकिन यह विचार इन को नहीं आता कि इसकी परवाह की जाती है। कभी कभी ऐसे लोग बच्चों के लिए धन इकट्ठा करते हैं और बच्चों की क्षमता के बारे में चिंता और परवाह नहीं है वह अपने जीवन में ही बच्चों के हाथों त्रस्त होते हैं और उसकी बुरी आदतों से कठिनाइयों में पड़ जाते हैं और वह माल जो उन्होंने ख़ुदा जाने किन किन तरीकों से और मार्गों से जमा किया था अंत में व्यभिचार शराब पीने में ही खर्च होता है और वह औलाद ऐसे माता-पिता के लिए शरारत और बदमाश की वारिस होती है।" फरमाया कि "बच्चों की परीक्षा भी बहुत बड़ी परीक्षा है अगर औलाद सालेह हो तो किस बात की परवाह हो सकती है। अल्लाह तआला ख़ुद फरमाता है कि وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِيْنَ (अल्आराफ :197)अर्थात अल्लाह तआला आप सालेहीन का मुतवल्ली और मतकफ्फिल होता है। अगर बदबख़्त है तो लाखों रुपए इसके लिए छोड़ जाओ वह बुराई में नष्ट कर के फिर कंगाल हो जाएगा और उनके दु:ख और परेशानी में होगा जो उसके लिए अनिवार्य हैं। फरमाया "जो व्यक्ति अपनी राय को अल्लाह तआला की राय और मंशा से सहमत करता है वह औलाद से संतुष्ट हो जाता है और वह उसी तरह है कि उसकी क्षमता के लिए कोशिश करे और दुआएं करे। इस मामले में ख़ुद अल्लाह तआला उसकी रक्षा करेगा।" उसको संभाल लेगा इसका प्रायोजक होगा। क्षमता के लिए कोशिश करे अर्थात इस के प्रशिक्षण की तरफ बहुत अधिक ध्यान दे। फरमाया "हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का एक कथन है कि मैं बच्चा था जवान हुआ अब बूढ़ा हो गया मैंने मुत्तकी को कभी ऐसी स्थिति में नहीं देखा कि उसे रिज़क की मार हो और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा। अल्लाह तआला तो कई नस्ल तक ध्यान रखता है। अत: ख़ुद नेक बनो बनो और अपनी संतानों के लिए एक उत्कृष्ट नमूना अच्छाई और तक्वा का हो जाओ।" (बात वही है कि संतान का हक़ अदा करने के लिए भी अपनी स्थिति को तदनुसार ढालना होगा जिस की इस्लाम शिक्षा देता है और तभी अगली पीढ़ी जो है वह सही रस्तों पर चलने वाली होगी और माता पिता के लिए आँखों की ठंडक का कारण बनेगी।) आप फरमाते हैं "ख़ुद नेक बनो और अपनी औलाद के लिए उत्कृष्ट नमूना नेकी और तक्वा का हो जाओ और इसे नेक तथा धार्मिक बनाने के लिए प्रयास और दुआ करो। जितनी कोशिश तुम उन के लिए धन इकट्ठा करने के लिए करते हो उतनी ही कोशिश इस बात में करो।" फरमाया कि "अत: वे काम करो जो बच्चों के लिए सबसे अच्छा नमूना और सबक हो और इसके लिए आवश्यक है कि सब से पहले स्वयं अपना सुधार करो। यदि तुम उच्च स्तर के मुत्तकी और परहेज़गार बन जाओगे और अल्लाह तआला को प्रसन्न कर लोगे तो विश्वास किया जाता है कि अल्लाह तआला तुम्हारी औलाद के साथ भी अच्छा मामला करेगा।"

(मल्फूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 108-110 प्रकाशन 1985 ई)

जहां इस्लाम पिता को यह कहता है कि अपने बच्चों के प्रशिक्षण पर ध्यान दो और उनके लिए दुआ करो वहाँ बच्चों को भी आदेश है कि तुम्हारा भी कुछ कर्तव्य है। जब तुम वयस्क हो जाओ तो माता-पिता के भी तुम पर कुछ अधिकार हैं उन्हें तुम ने अदा करना है। यह रिश्तों के अधिकार की कड़ियां ही हैं जो एक दूसरे से जुड़ने से शांतिपूर्ण समाज पैदा करती हैं।

माता-पिता के हक़ अदा करने की कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है और उसका कितना महत्त्व है इस बात का एहसास हर मोमिन को होना चाहिए। एक लड़का जब वयस्क होता है तो उसने कैसे माता पिता का अधिकार देना है इस बात को समझाते हुए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक अवसर पर इरशाद फ़रमाया। अब्दुल्लाह बिन अमरो से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में अर्ज़ किया कि मैं जिहाद पर जाना चाहता हूं फरमाया तेरे माता-पिता जीवित हैं। उसने कहा हाँ जीवित हैं तो आप ने फरमाया कि उन दोनों की सेवा करो यही तुम्हारा जिहाद है।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 3004)

अत: माता पिता की सेवा का महत्त्व का इससे हो सकता है।

फिर यही नहीं बल्कि आपस में प्यार और स्नेह का प्रसार करने के लिए पिता के दोस्तों से भी हुस्ने सुलूक का आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया। अत: इसलिए एक अवसर पर आपने फरमाया कि आदमी का सबसे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 29 June 2017 Issue No. 26

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

अच्छा धर्म है कि अपने पिता के दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक करे जबकि उसका पिता वफात पा चुका हो।"

(सुनन अबी दाऊद हदीस 5143)

फिर इस बात को और अधिक खोलकर एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस का रिवायत में यूँ उल्लेख मिलता है। हज़रत अबु उसैद अस्सादी कहते हैं कि हम लोग आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सेवा में हाज़िर थे कि बनी सलमा एक व्यक्ति उपस्थित हुआ और पूछने लगा कि हे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। माता-पिता की मृत्यु के बाद कोई ऐसी नेकी है जो उनके लिए कर सकूँ। आपने फरमाया हाँ क्यों नहीं। तुम उनके लिए दुआएं करो उनके लिए माफी की तलाश करो। उन्होंने जो वादे किसी से कर रखे थे उन्हें पूरा करो। उनके प्रियजनों तथा संबंधियों से इसी तरह अच्छा व्वयवहार और हुस्ने सुलूक करो जिस तरह वह अपने जीवन में उनके साथ क्या करते थे और उनके दोस्तों के साथ सम्मान और इज़्ज़त के साथ पेश आओ।

(सुनन अबी दाऊद हदीस 5142)

फिर एक मौका पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस व्यक्ति की इच्छा हो कि उसकी उम्र लंबी हो और उसका रिज़क बढ़ाया जाए तो उसे चाहिए कि अपने माता-पिता का सम्मान करे और रिश्तेदारों से अच्छे व्वयहार की आदत डाले।

(अल्जामेअ लि शुऐब दिल्द 10 पृष्ठ 264.265)

अत: बच्चे केवल नखरे उठाने के लिए नहीं बल्कि यौवन पर पहुंच कर उनके भी कुछ कर्तव्य हैं और माता-पिता के भी कुछ अधिकार हैं जो उन्होंने अदा करने हैं। शादियों के बाद विशेष रूप से अपने कर्तव्यों का ध्यान देना चाहिए और अगर इंसान पत्नी के भी कर्तव्यों को निभा रहा हो और माता-पिता की भी सेवा कर रहा हो और पत्नी को भी यह हिक्मत से एहसास दिलाए कि सास ससुर का क्या महत्त्व है और ख़ुद भी अपने सास ससुर की सेवा और उसके महत्त्व को जानता हो तो घरों में जो कई बार कभी झगड़े उत्पन्न न हों पैदा हो रहे हैं।

कई बार धार्मिक मतभेद की वजह से पिता पुत्र में मतभेद पैदा हो जाता है। कुछ नए अहमदी अब भी यह सवाल करते हैं इस अव्स्था में बेटों को बापों से अच्छा व्यवहार भी करना है और उनकी सेवा भी करनी है। एक बार बटाला के सफर के दौरान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम शेख अब्दुर्रहमान साहिब से उनके पिताजी के बारे में हालत पूछ रहे थे और उसके बाद आप ने नसीहत उन्हें फरमाई कि "उनके हक़ में दुआ करो" (वह अहमदी नहीं थे ग़ैर मुस्लिम थे।) "हर तरह और यथा सम्भव माता पिता की दिलजोई करनी चाहिए और उन्हें पहले से हज़ारों गुणा कुछ अधिक नैतिकता और अपना पवित्र नमूना दिखला कर इस्लाम धर्म का सच्चाई को मानने वाला बनाओ। नैतिक नमूना ऐसा चमत्कार है कि जो दूसरे चमत्कार बराबरी नहीं कर सकते। सच्चे इस्लाम की यह गुणवत्ता है कि इस से मनुष्य उन्नत चरित्र पर हो जाता है और वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो जाता है। शायद अल्लाह तआला तुम्हारे द्वारा उनके दिल में इस्लाम का प्रेम डाल दे। इस्लाम माता पिता की सेवा नहीं रोकता। सांसारिक मामले जिनसे धर्म का हर्ज नहीं होता उनकी हर तरह से पूरी अनुपालन करना चाहिए। दिल की गहराई से उनकी सेवा करो।

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 175 हाशिया प्रकाशन 1985 ई)

तो यह सामान्य नियम भी है कि तब्लीग़ में मुलायम ज़बान का हमेशा उपयोग होनी चाहिए। उच्च नैतिकता दिखलानी चाहिए।

फिर एक और घटना है यहाँ पिता भी मुसलमान है। इसका विस्तृत जवाब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दिया "एक व्यक्ति ने सवाल किया कि हे हज़रत! माता-पिता की सेवा और उनकी आज्ञा अल्लाह तआला ने इंसान पर फर्ज़ की है लेकिन मेरे माता-पिता हुज़ूर के बैअत के सिलसिला में दाख़िल होने की वजह से मुझे से सख्त निराश हैं और मेरी शक्ल भी देखना पसंद नहीं करते इसलिए जब हुज़ूर की बैअत के लिए आने को था, तो उन्होंने मुझे कहा कि हमसे पत्राचार भी न करना और अब हम तुम्हारी शक्ल भी देखना पसंद नहीं करते। अब मैं इस अल्लाह तआला के कर्तव्य के अनुपालन कैसे बाहर निकलूं। (अल्लाह तआला ने फरमाया है कि माता-पिता की सेवा करो और वह मेरी शक्ल भी देखना नहीं चाहते। संबंध नहीं रखना चाहते तो मैं इस सेवा को इस फर्ज़ को कैसे पूरा करूं।) आपने फरमाया कि "कुरआन शरीफ जहां माता-पिता की आज्ञा का पालन और ख़िदमत गुज़ारी के आदेश देता है वहाँ यह भी फरमाता है कि رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا कि अल्लाह तआला जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अगर तुम नेक हो तो वह अपनी तरफ झुकने वालों के लिए ग़फूर है। सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम को भी ऐसी परेशानी आ गई थी कि धार्मिक मजबूरियों की वजह से उनकी अपने माता पिता से विवाद हो गया था बहरहाल आप अपनी ओर से उनकी ख़ैरियत और भलाई के लिए हर समय तैयार रहो। जब कोई मौका नमले इसे हाथ से न दो। तुम्हारी नीयत का इनाम तुम्हें मिलकर रहेगा अगर केवल धर्म की वजह से और अल्लाह तआला की ख़ुशी को प्राथमिकता देने के लिए माता-पिता से अलग होना पड़ा है तो यह एक मजबूरी है। सुधार को समक्ष रखो और नियत की सेहत का ध्यान रखो और उनके हक़ में दुआ करते रहो। यह मामला कोई आज नया नहीं हुआ हज़रत इब्राहीम को भी ऐसा ही घटना घटी थी। बहरहाल ख़ुदा का हक प्रथम है अत: अल्लाह तआला को प्रथम करो और अपनी ओर से माता पिता के अधिकार अदा करने की कोशिश में लगे रहो और उनके हक़ में दुआ करते रहो और स्वास्थ्य नीयत का ख्याल रख।

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 130-131 प्रकाशन 1985 ई)

इरादा सही होना चाहिए। अत: कई लोग जो आज भी यह सवाल पूछते हैं कि माता-पिता के भी कर्तव्य हैं उन को हम कैसे अदा करें ऐसे हालात में तो उनके लिए यह जवाब पर्याप्त है।

बहरहाल एक मर्द की विभिन्न हैसियतों से जो ज़िम्मेदारियां हैं उन्हें अदा करने की कोशिश करनी चाहिए। अपने घरों को एक ऐसा नमूना बनाना चाहिए जहां मुहब्बत और स्नेह का वातावरण हर समय बना रहे। एक मर्द पति भी है, पिता भी है, बेटा भी है इस दृष्टि से उसे अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए और मर्दों की बहुत सारी हैसियतें और भी हैं लेकिन यह तीन हैसियतें मैंने वर्णन की हैं ताकि घर की जो मूल इकाई है जब इस मूल इकाई में शांति हो और इसमें अधिकतम सुन्दरता पैदा करने की कोशिश की जाए। तो तभी परिवेश की शांति की गारंटी वाला बना जा सकता है। अल्लाह तआला सब इसकी ताकत प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

दण्ड-विधान पर निश्चित रूप से अवगत होता है। प्रत्येक उद्दण्डता की जड़ अनभिज्ञता है। जो मनुष्य ख़ुदा की निश्चित आध्यात्मिक विद्या से कुछ हिस्सा लेता है वह उद्दण्ड नहीं रह सकता। यदि घर का मालिक जानता है कि एक भंयकर बाढ़ ने उसके घर की ओर मुंह किया है या उसके घर के इर्द-गिर्द आग लग चुकी है और मात्र थोड़ा सा स्थान शेष है, तो वह इस घर में ठहर नहीं सकता। फिर तुम ख़ुदा के प्रतिफल देने के नियम और दण्ड विधान पर विश्वास का दावा करके अपनी भयानक हालतों पर क्योंकर ठहर रहे हो । अत: तुम आंखें खोलो और अल्लाह के उस विधान को देखो जो समस्त संसार में लागू है। चूहे मत बनो जो नीचे की ओर जाते हैं अपितु ऊपर उड़ने वाले कबूतर बनो जो आकाश की बुलंदियों को अपने लिए पसंद करता है। तुम गुनाहों के परित्याग की बैअत करके फिर गुनाह पर स्थिर न रहो और सांप की भांति न बनो जो खाल उतारकर फिर भी सांप ही रहता है। मृत्यु को स्मरण रखो कि वह तुम्हारे पास आती जाती है और तुम्हें उसकी कोई सूचना नहीं । प्रयास करो कि पवित्र हो जाओ कि मनुष्य पवित्रता को तभी प्राप्त करता है जब स्वयं पवित्र हो जाए । परन्तु तुम इस नैमत को कैसे पा सकोगे ? इसका उत्तर ख़ुदा ने दिया है, जहां क़ुर्आन में कहता है وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ । (अलबक़रह) अर्थात नमाज़ और धैर्य के साथ ख़ुदा की सहायता की कामना करो ।

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 66 -68)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad